

p7



जन्नत में फिर-
जहर घोलना चाहता हैं कश्मीरी नेता

..... इंडियाज़ फास्टेस्ट ग्रोइंग न्यूज़ पेपर.....

तुष्टिकरण की राजनीति-
से मुक्ति पाने की ओर बढ़ चला है असम



p6

सेन्सर टाइम्स

www.censortimes.com

डाक पंजीयन क्रमांक-एमपी/आईडीसी/1117/2019-2021

वर्ष-17

अंक-8

मासिक

1 नवम्बर 2020

पृष्ठ-12

मूल्य- पाँच रुपये

बिहार

विधानसभा चुनाव

20-20 के अंदाज में



पुलवामा पर पाक मंत्री की स्वीकारोक्ति के बाद
राहुल माफी मांगें-नड्डा

p12



कार्टून विवाद को भारत की सीमाओं तक
साजिश के तहत पहुँचाया गया

p3



अन्दर के पृष्ठ पर.....

वायु प्रदूषण के मुद्दे पर ट्रंप ने क्यों की
भारत की आलोचना ? P-6

भारतीय अर्थव्यवस्था,
आ रहे सकारात्मक बदलाव P-2

नीतीश के शासन में बिहार में
कोई काम नहीं हुआ-तेजस्वी P-12

भविष्य की महामारियां
और भी खतरनाक होंगी P-12

सम्पादक की कलम से

निकिता तोमर हत्याकांड में हरियाणा पुलिस ने घटना के चंद घंटों केमें दोनों आरोपियों को हिरासत में लिया और आगामी दिन में उन्हें अदालत में भी पेश कर दिया। न्यायालय ने दोनों आरोपियों को दो दिन की पुलिस रिमांड पर भेज दिया है। बल्लभगढ़ में दिनदहाड़े छात्रा निकिता की निर्मम हत्या कर दी गई। पुलिस अधिक्षक बल्लभगढ़ जयवीर राठी ने बताया कि बीकॉम फाइनल की 21 वर्षीय छात्रा निकिता जो कॉलेज से पेपर देकर घर लौट रही थी तभी प्रमुख आरोपी तौसीफ ने निकिता को जबरन कार में बैठाने की कोशिश की। निकिता ने इंकार करने पर आरोपी ने पिस्टल से छात्रा के सिर में गोली मार दी। जिससे छात्रा गिर गई और उसकी मौके पर ही मौत हो गई। तौसीफ व उसका साथी रेहान कार में सवार होकर तुरंत फरार हो गए।

तौसीफ और रेहान को नूंह से हिरासत में लिया। तौसीफ गुड़गांव से सोहना के कबीर नगर का निवासी है। वहीं रेहान नूंह जिले के रीवासन का है। नाराज परिजनों व विभिन्न संगठनों ने इस घटना के बाद बल्लभगढ़ में नेशनल हाइवे व बीके चौक पर दिनभर जाम लगाए रखा। मृतक निकिता के परिजनों का आरोप है कि हत्या का आरोपी तौसीफ जबरन लड़की का धर्म परिवर्तन करवाना चाहता था। ऐसा करने में असफल रहने के बाद उसने पहले अपहरण करने का प्रयास किया और नाकाम रहने पर लड़की को गोली मार दी और हत्या कर दी। परिजनों का आरोप है कि अगर उनकी बेटी समुदाय विशेष होती तो उसे न्याय मिल जाता। छात्रा निकिता के परिजनों और प्रदर्शनकारियों ने सुबह से ही सोहना मेन रोड, सेक्टर-23 स्थित अपना घर सोसाइटी के सामने जाम लगा दिया। परिजनों की मांग है कि आरोपियों को या तो फांसी दो या फिर एनकाउंटर कर उनकी बेटी को न्याय दिलाया जाए। परिवार वालों कहना है कि जब वीडियो में साफ है कि आरोपी ने ही हत्या की है तो उसे तुरन्त सजा क्यों नहीं दी जा सकती? हम न्याय के लिए 15 साल तक इंतजार नहीं कर सकते। वहीं निकिता के पिता का दावा है कि आरोपी की मां पिछले दो साल से बेटी पर धर्म परिवर्तन का दबाव डाल रही थी। पुलिस आयुक्त ओपी सिंह के अनुसार मामला संज्ञान में आने के बाद तुरन्त प्रभाव से क्राईम ब्रांच की 11 टीमों को जल्द से जल्द आरोपियों को गिरफ्तार करने के दिशानिर्देश दिए थे। जिस पर कार्य करते हुए पुलिस की क्राईम ब्रांच की टीम फरीदाबाद से पलवल एवं मेवात तक चलाए गए लगभग पांच घंटे के ऑपरेशन के दौरान आरोपित को धर दबोचा। उन्होंने बताया कि आरोपी वर्ष 2018 में भी लड़की को अपने साथ ले गया था जिस पर मामला थाना सिटी बल्लभगढ़ में दर्ज किया गया था। गिरफ्तार आरोपित तौसीफ की उम्र 21 वर्ष है, आरोपित फिजियोथैरेपिस्ट का कोर्स कर रहा है और वह थर्ड ईयर में है। दूसरा आरोपित रेहान निवासी रीवासन मेवात का रहने वाला है। इस मामले में एसआईटी गठित की गई है। उन्होंने बताया कि पुलिस पीड़ित परिवार के साथ है। पुलिस के पास पर्याप्त सबूत हैं, जिनके आधार पर कोर्ट में अच्छी पैरवी कर आरोपितों को दोषी साबित करवा कड़ी सजा दिलाई जाएगी। निश्चित तौर पर यह एक और लव जेहाद का मामला लगता है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में बहुत तेजी से आ रहे हैं कई सकारात्मक बदलाव

अनुराग शर्मा

कोरोना वायरस महामारी के चलते आर्थिक गतिविधियां पूरे विश्व में ठप्प पड़ गई थीं। भारत भी इससे अछूता नहीं रहा एवं मार्च 2020 के बाद से देश में आर्थिक गतिविधियों में लगातार कमी दृष्टिगोचर हुई। जिसके चलते, कई लोगों के रोजगार पर विपरीत असर पड़ा था एवं शहरों से भारी मात्रा में मजदूरों का ग्रामों की ओर पलायन दिखाई दिया था। कुल मिलाकर कोरोना महामारी के काल के दौरान पूरे देश में एक तरह से अवसाद का माहौल उत्पन्न हो गया था। परंतु अब हर्ष का विषय है कि सितम्बर 2020 में आर्थिक गतिविधियों ने देश में पुनः रफ्तार पकड़ ली है। साथ ही कई क्षेत्रों में तो इस दौरान कई प्रकार के सकारात्मक बदलाव देखने में आए हैं। यथा, देश का विदेशी मुद्रा भंडार रिकार्ड स्तर पर पहुंच गया है। कृषि क्षेत्र से निर्यात बहुत तेजी से बढ़े हैं, ऊर्जा के क्षेत्र में क्रांति हो रही है, फार्मा उद्योग, वाहन उद्योग, सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग, मेडिकल टूरिज्म आदि क्षेत्रों में भारत ने पूरे विश्व में अपनी एक अलग पहिचान बना ली है। इसके कारण, शीघ्र ही देश अवसाद की स्थिति से उबर कर वापस सामान्य स्थिति में आ जाएगा।

भारत के विदेशी व्यापार क्षेत्र से बहुत अच्छी खबर आई है। बहुत लम्बे समय के बाद विदेशी व्यापार के चालू खाता में वर्ष 2020-21 की प्रथम तिमाही अर्थात् अप्रैल से जून 2020 के बीच में 1,980 करोड़ अमेरिकी डॉलर का आधिक्य शेष दर्ज किया गया है। सामान्यतः भारत के विदेशी व्यापार के चालू खाता में कमी का शेष ही रहता आया है। विदेशी व्यापार के चालू खाता में आधिक्य शेष होने का आशय यह है कि देश से निर्यात, आयात की तुलना में अधिक हो रहे हैं। जबकि सामान्यतः देश में आयात, निर्यात की तुलना में अधिक रहते हैं। साथ ही देश के निर्यात में भी 5.5 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। भारत का विदेशी मुद्रा भंडार भी दिनांक 20 अक्टूबर 2020 को 55,500 करोड़ अमेरिकी डॉलर के रिकार्ड स्तर पर पहुंच गया है एवं इसमें लगातार वृद्धि दृष्टिगोचर हो रही है। देश में विदेशी निवेश की मात्रा भी लगातार बढ़ती जा रही है।

अभी हाल ही में देश में ऊर्जा के उत्पादन से संबंधित जारी किए गए आँकड़ों से यह तथ्य उभर कर आया है कि भारत में ऊर्जा के कुल उत्पादन में स्वच्छ ऊर्जा का योगदान वित्तीय वर्ष 2020-21 के अगस्त माह तक 30 प्रतिशत हो गया है जो वित्तीय वर्ष 2019-20 के अंत में 24.9 प्रतिशत था। केंद्र सरकार द्वारा लागू की गई नीतियों को चलते देश के ऊर्जा उत्पादन में पारम्परिक ऊर्जा का योगदान लगातार कम होता जा रहा है। पारम्परिक ऊर्जा को जीवाश्म ऊर्जा भी कहते हैं एवं इसके निर्माण में तेल, गैस और कोयला आदि का उपयोग होता है। वहीं स्वच्छ ऊर्जा में सौर ऊर्जा एवं पवन ऊर्जा भी शामिल है। दूसरी, एक अन्य महत्वपूर्ण जानकारी के अनुसार भारत अब ऊर्जा क्षेत्र में इस दृष्टि से आत्म निर्भर हो चुका है कि देश में ऊर्जा की कुल आवश्यकता के 99.6 प्रतिशत भाग की उपलब्धता होने लगी है, जो वर्ष 2012-13 में 91.3 प्रतिशत ही हो पाती थी। वर्ष 2013-14 से प्रतिवर्ष ऊर्जा की कुल आवश्यकता एवं ऊर्जा की उपलब्धता के बीच का अंतर लगातार कम होता चला गया है, जो वर्ष 2012-13 के 8.7 प्रतिशत से घटकर वर्ष 2020-21 (अप्रैल-अगस्त) में 0.4 प्रतिशत रह गया है।

अन्तराष्ट्रीय ऊर्जा संस्थान द्वारा भी अपने एक समीक्षा प्रतिवेदन में बताया गया है कि भारत में 95 प्रतिशत लोगों के घरों में बिजली मुहैया कराई जा चुकी है और 98 प्रतिशत परिवारों की खाना पकाने के लिए, स्वच्छ ईंधन तक पहुँच बन गई है। साथ ही, उक्त समीक्षा प्रतिवेदन में यह भी बताया गया है कि ऊर्जा के क्षेत्र में निजी निवेश की मात्रा भी बढ़ी है, जिससे भारत में ऊर्जा के क्षेत्र की दक्षता में सुधार हुआ है। उसकी वजह से ऊर्जा की कीमतों में प्रतिस्पर्धा बढ़ी है एवं ऊर्जा की कीमतें सस्ती हुई हैं। सामान्य लोगों की ऊर्जा तक पहुँच बढ़ी है। ऊर्जा की दक्षता बढ़ने के चलते ऊर्जा की माँग में 15 प्रतिशत की कमी आई है। ऊर्जा की माँग में कमी का मतलब 30 करोड़ कार्बन के उत्सर्जन को टाला जा सका है। अन्तराष्ट्रीय ऊर्जा संस्थान द्वारा किया गया उक्त मूल्यांकन एक स्वतंत्र मूल्यांकन है अतः इस समीक्षा प्रतिवेदन का अपने आप में बहुत बड़ा महत्व है।

अब ऐसा आभास होने लगा है कि देश में कृषि क्षेत्र, आर्थिक विकास में अपने योगदान को बढ़ाने की ओर अग्रसर है। इसका हल्का-सा इशारा वित्तीय वर्ष 2020-21 की प्रथम तिमाही में कृषि एवं सहायक गतिविधियों के क्षेत्र में दर्ज की गई 3.4 प्रतिशत

की वृद्धि दर से मिलता है। जबकि इसी दौरान, सकल घरेलू उत्पाद में 22.6 प्रतिशत की कमी रही है। कोरोना महामारी से विशेष रूप से भवन निर्माण, व्यापार, होटल व्यवसाय, यातायात कार्य, सेवा क्षेत्र, विनिर्माण क्षेत्र आदि पर बहुत विपरीत प्रभाव पड़ा है।

परंतु कृषि क्षेत्र पर कोरोना महामारी का प्रभाव नहीं पड़ा है। इसी प्रकार मार्च से जून 2020 की तिमाही में देश से कृषि क्षेत्र में निर्यात भी 23.24 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज करते हुए रुपए 25,553 करोड़ तक पहुँच गए हैं। साथ ही, अप्रैल से जुलाई 2020 के दौरान राष्ट्रीय फ़र्टिलायज़र लिमिटेड ने फ़र्टिलायज़र की 18.79 लाख मीट्रिक टन की रिकार्ड बिक्री की है, जो पिछले वर्ष इसी अवधि के दौरान की गई 15.64 लाख मीट्रिक टन की बिक्री से 20 प्रतिशत अधिक है। देश में उपभोक्ता वस्तुओं की मांग ग्रामीण क्षेत्रों से अधिक देखने में आ रही है, जिसके चलते वाहनों की बिक्री सितम्बर 2020 माह में, पिछले वर्ष की इसी अवधि के दौरान की तुलना में 26 प्रतिशत अधिक रही है।

बुआई की दृष्टि से कृषि क्षेत्र में विस्तार हुआ है, जिसके चलते इस वर्ष खरीफ़ सीज़न की पैदावार अच्छी होने के आसार हैं। इस वर्ष, वर्षा भी सामान्य से 9 प्रतिशत अधिक रही है, जिसके कारण, खरीफ़ सीज़न के बाद रबी सीज़न में भी अधिक पैदावार होने की सम्भावना बलवती हो गई है। अतः अब ग्रामीण क्षेत्रों से उत्पादों की मांग में वृद्धि दिखाई देगी।

ऑर्गेनिक खेती करने वाले किसानों की संख्या के मामले में भारत पूरे विश्व में अब प्रथम स्थान पर आ गया है एवं ऑर्गेनिक खेती के क्षेत्र (एरिया) के मामले में भारत पूरे विश्व में 9 वें स्थान पर है। भारत से ऑर्गेनिक खेती के निर्यात में शामिल हैं फ़्लैक्स बीज, सीसेम, सोयाबीन, चाय, मेडिसिनल प्लांट, चावल एवं दालें। इसी प्रकार, दूध के उत्पादन में भी भारत विश्व में प्रथम स्थान पर आ गया है एवं कृषि क्षेत्र में उत्पादन के लिहाज़ से भारत पूरे विश्व में दूसरे स्थान पर आ गया है। परंतु, भारत से कृषि निर्यात मात्र 1 प्रतिशत है इसमें गेहूँ, दालें, फल आदि मुख्य रूप से शामिल हैं। लेकिन हमारे देश के पास बागवानी एवं मसालों आदि का निर्यात करने का जो सामर्थ्य है उसे भुनाया नहीं जा सका है। कृषि उत्पादन में तो हमारे देश ने काफी तरक्की कर ली है एवं इस क्षेत्र में हम लगभग आत्मनिर्भर बन गए हैं परंतु इस क्षेत्र से निर्यात का अच्छा स्तर प्राप्त नहीं हो पा रहा है।

भारत, फार्मा क्षेत्र में भी विश्व में प्रथम पंक्ति में आ गया है। आज भारत 100 से अधिक देशों को दवाईयों का निर्यात करता है इसके पीछे मुख्य कारण है भारतीय दवाओं की गुणवत्ता एवं भारतीय कम्पनियों की साख। भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा दवा बाज़ार है। दुनिया में बीमारियों के टीकों की 50 प्रतिशत मांग भारतीय दवा कम्पनियों से पूरी होती है। अमेरिका में 40 प्रतिशत पूर्ति भारतीय दवाओं से होती है। आज भारतीय फार्मा उद्योग का आकार 4000 करोड़ अमेरिकी डॉलर का हो गया है।

जेनेरिक दवाओं के निर्यात में तो भारत की जैसे बादशाहत है। पूरे विश्व में दवाओं के निर्यात में भारत की लगभग 20 प्रतिशत की हिस्सेदारी है। साथ ही भारत पूरे विश्व में, इलाज के लिहाज़ से पसंद किया जाने वाला तीसरा सबसे बड़ा देश बन गया है। वर्ष 2013 में 59,129 मेडिकल वीज़ा जारी किए गए थे जबकि वर्ष 2017 में बढ़कर 495,056 मेडिकल वीज़ा जारी हुए। विकसित देशों में इलाज बहुत महंगा है, जबकि भारत में विकसित देशों में खर्च होने वाली राशि की तुलना में केवल 20/30 प्रतिशत तक राशि में इलाज हो जाता है। साथ ही भारत में वैश्विक स्तर की चिकित्सा सुविधायें उपलब्ध करायी जा रही हैं। अतः भारत में मेडिकल टूरिज्म फल फूल रहा है। पूरे विश्व के चिकित्सा पर्यटन में भारत का हिस्सा करीब 18 प्रतिशत है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तो भारत ने विकसित देशों में जाकर अपना लोहा मनवा लिया है। आज अमेरिकी में सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कई बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को भारतीय ही चला रहे हैं। अमेरिका में जारी किए जाने वाले एच1बी वीज़ा की कुल संख्या में से करीब करीब 70 प्रतिशत हिस्सा भारतीयों को जारी होता है। इनमें से कई कम्पनियों में मुख्य कार्यपालन अधिकारी भी आज भारतीय ही हैं।

फ्रांस का विरोध ज्यों हो रहा है, इस थ्योरी को समझने की जरूरत है। एक पत्रिका में पैगंबर मोहम्मद साहब का अपमानजनक कार्टून छापा गया, उसका सबसे पहले विरोध अरब इस्लामिक मुल्कों में हुआ। वहां की आग अब एशियाई देशों में भी पहुंच गई। घटना से फ्रांस को ही ज्यों जोड़ा जा रहा है उन्हें ही टारगेट ज्यों जया जा रहा है? दरअसल, इस्लाम के पैगंबर मोहम्मद साहब का विवादित कार्टून छापने के विवादित कदम का मैक्रों ने बचाव किया, जिस पर इस्लामिक देश भड़क गए। उसके बाद फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के खिलाफ मुस्लिम देशों में तीखी प्रतिक्रिया देखने को मिली। विवादित कार्टून का मसला अब पाकिस्तान और बांग्लादेश तक पहुंच गया है। पाकिस्तान में तो विरोध हल्का है लेकिन बांग्लादेश में विरोध की लपटें तेज हैं। एशिया में विरोध की चिंगारियों के फैलने के पीछे एक सुनियोजित साजिश है। कुछ इस्लामिक देश जानबूझकर ऐसा करके भारत को भी इस मसले में लपेटने की फिराक में हैं। भारत का फ्रांस को समर्थन करना और उसके बाद विरोध के स्वर बांग्लादेश में फूटना, बहुत कुछ इशारा करता है।

कार्टून विवाद को भारत की सीमाओं तक षडयंत्र के तहत पहुँचाया



जॉ. रमेश ठाकुर

फ्रांस का विरोध ज्यों हो रहा है, इस थ्योरी को समझने की जरूरत है। एक पत्रिका में पैगंबर मोहम्मद साहब का अपमानजनक कार्टून छापा गया, उसका सबसे पहले विरोध अरब इस्लामिक मुल्कों में हुआ। वहां की आग अब एशियाई देशों में भी पहुंच गई।

अरब के मुस्लिम देश फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों को मौजूदा विवाद में फंसाकर अपनी पुरानी खूबस निकालना चाहते हैं। मैक्रों हमेशा से कट्टरपंथियों के निशाने पर रहे हैं, उन्होंने सदैव उनके क्रूरतापूर्ण कार्यों का विरोध किया है। साथ ही भारत के साथ उनका सामान्य व्यवहार भी इस्लामिक देशों को अखरता रहा है। इस वक्त भी भारत उनके पक्ष में खड़ा है, ये भी मुस्लिम देशों को अखर रहा है। यही कारण है कि पड़ोसी मुल्क बांग्लादेश की सड़कों पर बीते दो दिनों से हाय-हाय के नारे गूँज रहे हैं। विरोध के नारे किसी अंदरूनी मसले को लेकर नहीं लग रहे हैं बल्कि फ्रांस के राष्ट्रपति के खिलाफ लोग आक्रोशित होकर नारे लगा रहे हैं। फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के इस्लाम पर दिए बयान के बाद न सिर्फ बांग्लादेश में, बल्कि कई अन्य इस्लामिक देशों में भी उनका विरोध हो रहा है। उनके नाम के विरोध साथ-साथ फ्रांस के उत्पादों का भी बहिष्कार होना शुरू हो गया है। ठीक उसी तरह जिस तरह हिंदुस्तानियों ने चीनी सामान लेना बंद कर दिया है। हालांकि दोनों जगह का विरोध अलग-अलग मुद्दों पर है।

इस्लामिक देश फ्रांस का विरोध इसलिए कर रहे हैं क्योंकि उन्होंने पैगंबर मोहम्मद साहब का अपमान किया है। वहीं, भारत में चीन का विरोध सरहद पर तनातनी को लेकर है। लेकिन उन्होंने हमसे इतना जरूर सीख लिया है कि जब किसी को उसकी औकात दिखानी हो तो आर्थिक रूप से चोट मारनी चाहिए। हिंदुस्तान में चीन का सालाना करोड़ों नहीं, कई हजार अरबों में व्यापार होता था, लेकिन बहिष्कार के बाद धड़ाम से जमीन पर गिर गया। कमोबेश, इस्लामिक देश भी फ्रांस को कुछ ऐसा ही सबक सिखाना चाहते हैं। बांग्लादेश की राजधानी ढाका में फ्रांस के खिलाफ अनगिनत प्रदर्शनकारी सड़कों पर उतरे हुए हैं और फ्रांस के सामानों का जनता से बहिष्कार करने की अपील कर रहे हैं। हालांकि प्रत्यक्ष रूप से बहिष्कार का असर

देखने को भी मिल रहा है। ढाका के दुकानदार फ्रांस के सामानों को सड़कों पर लाकर जला रहे हैं। जनता भयंकर रूप से आक्रोशित है, कई जगहों पर राष्ट्रपति मैक्रों का पुतला जलाए गए हैं और उनके खिलाफ जमकर नारेबाजी हो रही है। प्रदर्शनकारी एक ही बात पर अड़े हैं कि कथित इस्लामोफोबिया को लेकर फ्रांस के राष्ट्रपति मैक्रों को सजा दी जाए।

फ्रांस का विरोध क्यों हो रहा है, इस थ्योरी को समझने की जरूरत है। एक पत्रिका में पैगंबर मोहम्मद साहब का अपमानजनक कार्टून छापा गया, उसका सबसे पहले विरोध अरब इस्लामिक मुल्कों में हुआ। वहां की आग अब एशियाई देशों में भी पहुंच गई। घटना से फ्रांस को ही क्यों जोड़ा जा रहा है उन्हें ही टारगेट क्यों क्या जा रहा है? दरअसल, इस्लाम के पैगंबर मोहम्मद साहब का विवादित कार्टून छापने के विवादित कदम का मैक्रों ने बचाव किया, जिस पर इस्लामिक

देश भड़क गए। उसके बाद फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के खिलाफ मुस्लिम देशों में तीखी प्रतिक्रिया देखने को मिली। विवादित कार्टून का मसला अब पाकिस्तान और बांग्लादेश तक पहुंच गया है। पाकिस्तान में तो विरोध हल्का है लेकिन बांग्लादेश में विरोध की लपटें तेज हैं। एशिया में विरोध की चिंगारियों के फैलने के पीछे एक सुनियोजित साजिश है। कुछ इस्लामिक देश जानबूझकर ऐसा करके भारत को भी इस मसले में लपेटने की फिराक में हैं। भारत का फ्रांस को समर्थन करना और उसके बाद विरोध के स्वर बांग्लादेश में फूटना, बहुत कुछ इशारा करता है।

गौरतलब है कि पैगंबर मोहम्मद साहब के फोटो के साथ छेड़छाड़ पहले भी हुई, उसका जमकर विरोध भी हुआ। लेकिन इस बार विरोध कुछ ज्यादा ही हो रहा है। कोरोना काल में लोग जब अपने स्वास्थ्य के प्रति

अलर्ट हैं, बावजूद इसके लोग विरोध करने के लिए सड़कों पर जमा हैं। हालांकि धार्मिक और धार्मिकता से जुड़े मसलों पर विरोध करने का इतिहास बहुत पुराना है। कोई भी किसी को किसी धार्मिक गुरु, ग्रंथ, पवित्र स्थान या पुरुष को अपमानित करने की इजाजत नहीं देता। धर्मों में जो पूजनीय है, वह सभी के लिए एक समान होना चाहिए। कई बार ऐसे विरोध की आड़ में मुद्दे दूसरी ओर भटक जाते हैं, या भटका दिए जाते हैं। फ्रांस के साथ भी कुछ ऐसा ही हो रहा है। राष्ट्रपति मैक्रों को इस्लाम के खिलाफ माना जाता है। उनके खिलाफ विरोध की चिंगारी को भड़काने का इससे अच्छा मौका मुस्लिम देशों को और नहीं मिल सकता था? कई देशों ने इससे पूर्व में भी राष्ट्रपति मैक्रों के खिलाफ फतवे जारी किए थे। कुछ मुस्लिम देशों ने उनके आने पर रोक भी लगाई थी।

मैक्रों जब फ्रांस के राष्ट्रपति बने थे, उस वक्त भी उनका विरोध हुआ था। आरोप था कि ऐसे व्यक्ति को राष्ट्रपति जैसे पद पर नहीं होना चाहिए, जो विशेष समुदाय के प्रति घृणा का भाव रखता हो। मैक्रों फ्रांस की जनता द्वारा चुने हुए जन प्रतिनिधि थे, इसलिए उनके विरोध का ज्यादा असर नहीं हुआ। लेकिन जबसे उन्होंने पैगंबर मोहम्मद साहब के विवादित कार्टून का समर्थन किया है माहौल उनके खिलाफ हो गया। उनके खिलाफ कई मुस्लिम देशों में आंदोलन हो रहे हैं। उनके पुतले को जूतों का हार पहना कर गलियों में घुमाया जा रहा है। पुतलों को कालिश पोतकर आग के हवाले किया जा रहा है। पूरे मसले पर भारत की पैनी नजर बनी हुई है। आपसी संबंधों को देखते हुए फिलहाल भारत ने फ्रांस का बचाव किया है। इस संबंध में भारतीय विदेश मंत्रालय ने अपनी स्थिति स्पष्ट कर दी है।

भारत सरकार ने अंतरराष्ट्रीय वाद-विवाद के सबसे बुनियादी मानकों के उल्लंघन के मामले में राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के खिलाफ अस्वीकार्य भाषा की घोर निंदा की है। भारत ने आपत्ति जताई है कि किसी भी राष्ट्रपति के साथ अमर्यादित भाषा का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। विरोध करने का भी एक तरीका होता है जिसे मुकम्मल रूप से अपनाया जा सकता है। भारत ने भयानक तरीके से वक्र आतंकवादी हमले में फ्रांसिसी शिक्षक को मारने की भी निंदा की है।

भारत सरकार ने मृतक परिवार और फ्रांस के लोगों के प्रति संवेदना व्यक्त की है। भारत के इस रुख से पाकिस्तान जैसे कट्टरपंथ मुल्कों को आपत्ति भी हुई है। पैगंबर कार्टून विवाद को भारत की सीमाओं तक पहुंचाने की इस्लामिक देशों की साजिश को भारत सरकार को समझना होगा।



ककर स्टोरी

20-20 के अंदाज में ही लड़ा जा रहा है



संलग्न चित्र (लेखक की संप्रदाय है)

प्रधानमंत्री के भाषण से बादल छंटने की बजाय और ज्यादा गहरा गए। ऐसे में एक बार फिर से यही कहा जा सकता है कि इस बार वाकई बिहार का विधानसभा चुनाव सिर्फ 2020 ही नहीं है बल्कि 20-20 के अंदाज में लड़ा भी जा रहा है।

वै

से तो राजनीति को अजग-गजब संभावनाओं का ही खेल माना जाता है लेकिन कई बार चुनावी राजनीति में कुछ ऐसा हो ही जाता है जो आम जनता के साथ-साथ राजनीतिक पंडितों को भी हैरान करने वाला होता है। 2020 का बिहार विधानसभा चुनाव भी जिस अंदाज में लड़ा जा रहा है वो काफी हैरान करने वाला है। पिछले कुछ महीनों से जो राजनीतिक सुगबुगाहट पटना से लेकर दिल्ली तक हो रही थी वो विधानसभा चुनाव की घोषणा होने तक थोड़ी-बहुत साफ तो हो गई थी लेकिन इसके बावजूद उसमें कई किंतु-परंतु लगे थे। ऐसे में सबकी नजरें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की बिहार रैली की तरफ थीं। सब यह कयास लगा रहे थे कि प्रधानमंत्री के भाषण से यह साफ हो जाएगा कि बिहार में कौन किसकी तरफ से...किसके लिए लड़ रहा है। लेकिन प्रधानमंत्री के भाषण से बादल छंटने की बजाय और ज्यादा गहरा गए। ऐसे में एक बार फिर से यही कहा जा सकता है कि इस बार वाकई बिहार का विधानसभा चुनाव सिर्फ 2020 ही नहीं है बल्कि 20-20 के अंदाज में लड़ा भी जा रहा है।

नरेंद्र मोदी ने पहली बार किया नीतीश के लिए चुनाव प्रचार

पिछले एक दशक में धर्मनिरपेक्षता के नाम पर नीतीश कुमार ने अपने आपको मोदी विरोध के प्रतीक के रूप में स्थापित कर दिया था। पटना में जुटे भाजपा नेताओं को भोज का निमंत्रण देकर थाली छीनने से लेकर 2014 में मोदी को प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार बनाने की वजह से एनडीए गठबंधन का साथ छोड़ने तक नीतीश ने अपनी छवि एक ऐसे नेता की बना ली थी कि सबको खास कर मोदी विरोधियों को यह लगने लगा था कि राष्ट्रीय स्तर पर मोदी को टक्कर कांग्रेस के राहुल गांधी नहीं बल्कि जेडीयू के नीतीश कुमार ही दे सकते हैं।

उस समय यह भला कौन सोच सकता था कि एक ऐसा भी दौर आएगा जब नरेंद्र मोदी नीतीश कुमार के लिए चुनाव प्रचार करते नजर आएंगे। उस समय यह कौन सोच सकता था कि बिहार में नीतीश कुमार को लेकर मतदाताओं में इतना गुस्सा भर जाएगा कि उन्हें भी चुनाव जीत कर फिर से मुख्यमंत्री बनने के लिए मोदी के नाम का ही आसरा लेना पड़ेगा, लेकिन इस बार वाकई ऐसा ही हो रहा है।

भाजपा-नीतीश सरकार या भाजपा-लोजपा सरकार ?

बिहार के मतदाताओं के सामने भ्रम और दुविधा की स्थिति इतनी ज्यादा हो गई है कि उन्हें समझ ही नहीं आ रहा है कि किसकी सरकार बनाए। एक तरफ नीतीश कुमार हैं जो पिछले 15 वर्षों से बिहार की सत्ता में बने हुए हैं। नीतीश कुमार जेडीयू-भाजपा गठबंधन के नेता और चेहरा हैं जिनके नाम पर और जिन्हें फिर से मुख्यमंत्री बनाने के घोषित लक्ष्य के साथ जनता दल-यू और भाजपा मिलकर चुनाव लड़ रही हैं तो दूसरी तरफ दिवंगत रामविलास पासवान की पार्टी लोजपा है जो उनके बेटे चिराग पासवान के नेतृत्व में अकेले चुनाव लड़ रही है। चिराग चुनाव तो अकेले लड़ रहे हैं लेकिन उनका लक्ष्य खुद मुख्यमंत्री बनना नहीं है बल्कि वे भाजपा का मुख्यमंत्री बनाने के उद्देश्य के साथ

चुनावी मैदान में उतरे हुए हैं।

चिराग पासवान जम कर बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर राजनीतिक हमला कर रहे हैं लेकिन साथ ही वो जम कर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तारीफ भी कर रहे हैं। बिहार के चुनावी मैदान में उतरे पीएम मोदी ने भी मंच से रामविलास पासवान को श्रद्धांजलि देकर और चिराग के बारे में चुप्पी साध कर मतदाताओं की दुविधा को और ज्यादा बढ़ा दिया है।

दुविधा में हैं या सतर्क हैं नीतीश कुमार

1990 में लालू यादव को बिहार का मुख्यमंत्री बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले नीतीश कुमार ने कुछ ही सालों बाद लालू को हटाने का एकमात्र एजेंडा बना लिया था। 1994 के बाद नीतीश कुमार ने हर उस दल और नेता से हाथ मिलाया जो लालू यादव को सत्ता से हटाने में उनकी थोड़ी भी मदद कर सकता था। हालांकि ये और बात है कि लालू यादव के बाद उनकी पत्नी राबड़ी देवी बिहार की मुख्यमंत्री बन गईं और नीतीश कुमार को इस परिवार को सत्ता से हटाने में 15 साल लग गए। 2005 में भाजपा के साथ मिलकर नीतीश ने बिहार में सरकार बनाई लेकिन नरेंद्र मोदी के राष्ट्रीय परिदृश्य पर आने के बाद पुराने सहयोगी भाजपा से संबंध तोड़कर लालू यादव के समर्थन से सरकार चलाते रहे। लालू यादव की पार्टी के साथ मिलकर चुनाव लड़ा, फिर से मुख्यमंत्री बने और उनके दोनों बेटों तेज प्रताप और तेजस्वी को बिहार की राजनीति में स्थापित करने में बड़ी भूमिका निभाई। आज लालू के वही बेटे नीतीश को सत्ता से हटाने के लिए लड़ रहे हैं तो नीतीश कुमार उसी बीजेपी और नरेंद्र मोदी के सहयोग से सत्ता बचाने के

विरोधी दलों के नेताओं द्वारा किसानों के प्रदर्शन के सहारे मोदी सरकार की छवि को पूंजीपतियों वाली सरकार के तौर पर पेश किया जा रहा है। मोदी सरकार भले किसानों के लिए अच्छा कानून लाई हो, लेकिन उसे विरोधियों की चालबाजियों के चलते बड़ा सियासी नुकसान न हो, इसके लिए मोदी सरकार को किसानों का विश्वास जीतने का क्रम लगातार जारी रखना चाहिए। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि इन विधेयकों के विरोध में केंद्रीय मंत्री हरसिमरत कौर बादल ने न सिर्फ इस्तीफा दे दिया, बल्कि उनका इस्तीफा स्वीकार भी कर लिया गया। खैर, सरकार ने अपनी ओर से साफ संकेत दे दिया है कि वह इस मामले में पीछे नहीं हटेगी। अगर कोई फैसला देश या किसी समाज के हित में लिया जा रहा है तो सरकार को दबाव में आकर पीछे हटना भी नहीं चाहिए।

लिए लड़ रहे हैं।

20-20 के अंदाज में बैटिंग के लिए तैयार हैं राजनीतिक दल

इन परिस्थितियों को देखते हुए तो इतना ही कहा जा सकता है कि सभी राजनीतिक दल 20-20 के अंदाज में बैटिंग करने की तैयारी करके चुनावी मैदान में उतरे हैं। सबको इंतजार कुछ ऐसे ओवरों का है जिसमें वो ईवीएम पर चौके-छक्कों की बरसात कर सके लेकिन साथ ही सबकी नजरें दूसरी टीमों पर भी टिकी हुई हैं ताकि वो बेहतरीन गेंदबाजी करके उन्हें कम स्कोर पर आउट भी कर सकें।

नीतीश कुमार का लक्ष्य है गठबंधन में बीजेपी से ज्यादा सीटें हासिल करना और चिराग को कम से कम सीटों पर रोकना। वहीं भाजपा का घोषित स्टैंड चाहे जो भी हो लेकिन सब यह मान रहे हैं कि वो इस बार अपना मुख्यमंत्री बनाने के उद्देश्य के साथ चुनाव में उतरी है। ऐसे में जाहिर है कि भाजपा यह चाहती है कि वो नंबर वन पार्टी बन कर विधानसभा में जाएं, नीतीश कुमार की सीटें घटें और लोजपा अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करे। चिराग ने तो अपना लक्ष्य पहले से ही घोषित कर रखा है।

वहीं तेजस्वी यादव चाहते हैं कि राजद सबसे बड़ी पार्टी बन कर उभरे, महागठबंधन को पूर्ण बहुमत मिले और अगर थोड़ी-बहुत कसर रह भी जाती है तो चिराग पासवान, उपेन्द्र कुशवाहा और ओवैसी जैसे नेताओं को धर्मनिरपेक्षता के नाम पर अपने पाले में लाकर किसी तरह सरकार बनाई जाए।

और जैसा कि 20-20 के मैच में आमतौर पर अंतिम ओवरों में फैसला होता है तो यहां भी यही होना तय माना जा रहा है। बिहार में भी अंतिम ओवरों यानि बिल्कुल अंतिम समय पर ही यह फैसला होगा कि किसकी बैटिंग-बॉलिंग शानदार रही और कौन किस वजह से जीता। तब तक आप सब एक रोमांचक चुनावी मैच का लुप्त उठाते रहिए।

लालू और पासवान के बिना फीकी नजर आ रही है बिहार की चुनावी रंगत

रवि साहू

बिहार विधानसभा चुनाव में जहां सभी राजनीतिक दलों के गठबंधन चुनाव जीतने के लिए पूरा जोर लगा रहे हैं। वहीं राष्ट्रीय जनता दल के नेता लालू प्रसाद यादव व लोक जनशक्ति पार्टी के नेता रामविलास पासवान के बिना बिहार का चुनाव फीका लग रहा है।

बिहार विधानसभा चुनाव का प्रचार पूरे शबाब पर है। वहां आगामी 28 अक्टूबर, 3 व 7 नवंबर को 3 चरणों में वोट डाले जाएंगे। वोटों की गिनती 10 नवंबर को होगी। कोरोना के दौर में बिहार में विधानसभा चुनाव करवाना चुनाव आयोग व राज्य सरकार के लिए किसी चुनौती से कम नहीं होगा। बिहार में आए दिन बड़ी संख्या में कोरोना संक्रमित मरीज मिल रहे हैं। अब तक वहां कोरोना पॉजिटिव लोगों की संख्या दो लाख चार हजार का आंकड़ा पार कर चुकी है। वहीं कोरोना से मरने वालों की संख्या 900 से अधिक हो चुकी है।

ऐसे डर के माहौल में चुनाव करवाना व सात करोड़ 18 लाख लोगों का वोट डालना दोनों ही अपने आप में बहुत चुनौती भरा काम है। मगर बिहार विधानसभा का कार्यकाल शीघ्र ही पूरा होने जा रहा है। इसलिए वहां चुनाव करवाना चुनाव आयोग की संवैधानिक मजबूरी हो गयी है। चुनाव प्रक्रिया के दौरान ही बिहार सरकार में पंचायती राज मंत्री रहे जदयू नेता कपिलदेव कामत, अति पिछड़ा कल्याण मंत्री व भाजपा नेता विनोद सिंह, अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री खुशीद उर्फ फिरोज की पत्नी बैबून निशा की कोरोना से मौत हो चुकी है। गया से जदयू सांसद विजय मांझी भी चुनाव प्रचार के दौरान कोरोना पॉजिटिव पाये गए हैं।

बिहार विधानसभा चुनाव में जहां सभी राजनीतिक दलों के गठबंधन चुनाव जीतने के लिए पूरा जोर लगा रहे हैं। वहीं राष्ट्रीय जनता दल के नेता लालू प्रसाद यादव व लोक जनशक्ति पार्टी के नेता रामविलास पासवान के बिना बिहार का चुनाव फीका लग रहा है। लालू प्रसाद यादव चारा घोटाले में रांची की जेल में सजा काट रहे हैं। वहीं रामविलास पासवान का पिछले दिनों निधन हो गया था। 1977 के बाद पहली बार लालू यादव व रामविलास पासवान बिहार के चुनावी परिदृश्य से ओझल हैं। चुनावों के दौरान अपने बेबाक बयानों को लेकर दोनों ही नेता चर्चित रहते थे। लालू यादव जहां माय (मुस्लिम-यादव) समीकरण के बल पर वर्षों तक बिहार की सत्ता पर काबिज रहे थे। वहीं दलित वोट बैंक के दम पर पासवान लम्बे समय तक केन्द्र में मंत्री रहे।

बिहार के चुनाव में इस बार मुख्य मुकाबला एनडीए व महागठबंधन के मध्य होगा। 2019 के लोकसभा चुनाव में एनडीए को 53.25 प्रतिशत वोट व 39 सीटें मिली थीं। यूपीए को 30.76 प्रतिशत वोट व एक सीट मिली थी। 2019 के चुनाव में एनडीए में शामिल लोजपा इस बार बिहार में करीब डेढ़ सौ सीटों पर अकेले चुनाव लड़ रही है। वहीं यूपीए में शामिल पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी की हम पार्टी व सन ऑफ मल्लाह के नाम से मशहूर मुकेश साहनी की वीआईपी पार्टी एनडीए के साथ मिलकर चुनाव लड़ रही है। वहीं राजद, कांग्रेस के साथ भाकपा, माकपा व भाकपा माले महागठबंधन बनाकर चुनाव मैदान में उतरे हैं।

पिछले लोकसभा चुनाव में महागठबंधन के साथ रहे राष्ट्रीय लोक समता पार्टी के अध्यक्ष व पूर्व केंद्रीय मंत्री उपेंद्र कुशवाहा ने ग्रैंड डेमोक्रेटिक सेकुलर फ्रंट नाम से 6 दलों का एक नया मोर्चा बनाया है। इस मोर्चे में राष्ट्रीय लोक समता पार्टी, एआईएमआईएम, बसपा, सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी, समाजवादी जनता दल डेमोक्रेटिक और जनतांत्रिक पार्टी सोशललिस्ट शामिल हैं। मोर्चा का संयोजक पूर्व केंद्रीय मंत्री देवेंद्र प्रसाद यादव को बनाया गया है। एआईएमआईएम के नेता असदुद्दीन ओवैसी ने उपेंद्र कुशवाहा को अपने मोर्चे की ओर से मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित किया है।

पूर्व सांसद व जन अधिकार पार्टी (लोकतांत्रिक) के अध्यक्ष पप्पू यादव ने प्रगतिशील लोकतांत्रिक गठबंधन (पीडीए) बनाया है। जिसमें एमके फैजी की सोशल



बिहार की जनता ने

‘रोजगार’ पर मतदान किया तो पूरे भारत में सबसे ज्वलंत मुद्दा बन जायेगा

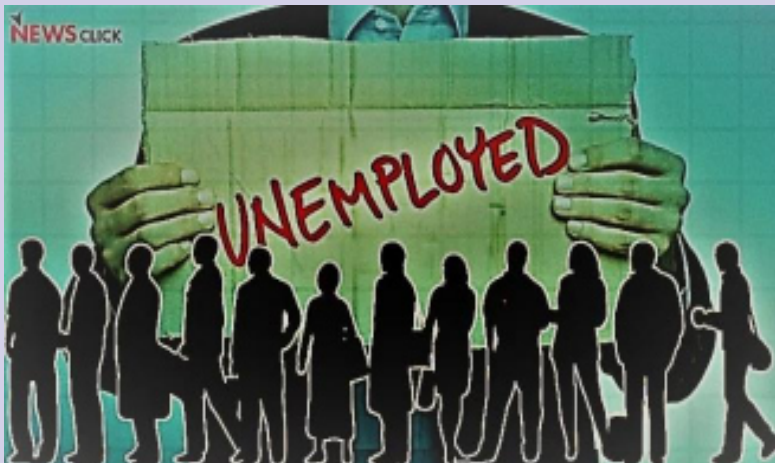
बी. कल्लु

बिहार के चुनाव में दस लाख नौकरी देना मुद्दा बना जो शायद कभी-कभार होता है, इसका परिणाम केवल बिहार में ही नहीं दिखेगा बल्कि पूरे देश में दिखेगा। अगर, बिहार के लोगों ने इस मुद्दे पर मतदान किया तब ऐसा देखने को मिल सकता है।

अमेरिका एवं यूरोपीय देशों की धनाढ्यतां और सुविधाएं देखकर भारत का बहुतायत में इसका प्रभाव पड़ता है। इन सभी का परिणाम निजीकरण, उदारीकरण कि और बड़ रहा है। ये तथाकथित बुद्धिजीवी एवं व्यापारी सोचे कि उनकी नकल करके हम भी वैसे हो जायेंगे जबकि परिस्थितियों कि तुलना नहीं की। यूरोपीय देशों में औद्योगिक क्रान्ति सत्रहवीं-अठारवी शताब्दी में हो चुकी है और आज भी उस दौर की तुलना में कुछ मायनों में हम उनसे पीछे हैं। यूरोप में सुधारवाद, औद्योगिकीकरण एवं जनतंत्र सत्रहवीं एवं अठारवीं शताब्दी में जड़ें जमा चुकी थी। वहां के विद्रोही एवं व्यापारी अमेरिका में बड़ी संख्या में गए तो उनकी सोच भी साथ गयी। 1917 में रूसी क्रांति के बाद यूरोप और अमेरिका भयभीत हुए और इसलिए राज्य के चरित्र में तेजी से बदलाव आया। साम्यवादी विचारधारा के खतरे से बचने के लिए इन देशों के राज्य के चरित्र बदले जिन्हें हम कल्याणकारी कहते हैं।

बिहार में इस समय विधानसभा चुनाव हो रहा है। तेजस्वी यादव ने दस लाख सरकारी नौकरी देने का वायदा करके राज्य को कल्याणकारी बनाने का प्रयास किया है। 2014 में भाजपा की सरकार केंद्र में आई और अंधाधुंध अमेरिका और यूरोप के विकास मॉडल पर चल पड़े। वहां पर अभी तक चीजें निजी क्षेत्र में हैं और राज्य धीरे-धीरे अपना कल्याणकारी स्वरूप खो बैठे हैं। 60-70 के दशक में रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि देने का कार्य सरकार का होना चाहिए ऐसी मांगें हुआ करती थीं। 90 के बाद बदलाव आना शुरू हुआ

और मोदी राज में तो लगा ही नहीं कि राज्य को कल्याणकारी होना चाहिए। शिक्षा और स्वास्थ्य को निजी क्षेत्र में धकेला और सरकारी शिक्षण संस्थाएं कमजोर हुयीं। स्वास्थ्य के मामले में भी कुछ ऐसा नजरिया रहा



रोजगार के मामले में सरकार ने बिल्कुल ही पल्ला झाड़ लिया और इसे अनावश्यक सरकार के ऊपर बोझ मान लिया। मीडिया, बुद्धिजीवी और सरकार के अनोखे गठजोड़ से माहौल बनाया गया कि हजारों एवं लाखों कर्मचारियों-अधिकारियों पर सरकार खर्चा करती है। क्यों नहीं इसे खत्म कर दिया जाये। तमाम तरीके निकाले गए जैसे निजीकरण, विनिवेश, आउटसोर्सिंग, ठेकेदारी आदि और दूसरी तरफ वीआरएस एवं सीआरएस की तमाम योजनायें लायी गयीं। कर्मचारी-अधिकारी सेवानिवृत्त होते रहे और दूसरी तरफ नई भारतीयों के रास्ते बंद कर दिए गए। इस तरह से सरकार काफी हद तक गैर कल्याणकारी होती गयी जैसे यूरोप और अमेरिका

डेमोक्रेटिक पार्टी ऑफ इंडिया, उत्तर प्रदेश के चंद्रशेखर आजाद की आजाद समाज पार्टी शामिल है। इस मोर्चे की तरफ से पप्पू यादव को मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित किया गया है। रामविलास पासवान के देहांत के बाद उनके पुत्र चिराग पासवान लोजपा के सर्वेसर्वा नेता हैं। उन्होंने चुनाव में नीतीश कुमार के खिलाफ ताल ठोक रखी है तथा उनकी आलोचना का कोई मौका नहीं छोड़ रहे हैं। उन्होंने एनडीए गठबंधन में शामिल जनता दल यू के सभी उम्मीदवारों के खिलाफ अपनी पार्टी के प्रत्याशियों को चुनाव लड़वाने की घोषणा की है। भाजपा व जदयू में टिकट से वंचित रहे नेताओं को चिराग पासवान लोजपा में शामिल कर अपनी पार्टी का प्रत्याशी बना रहे हैं। चिराग खुले आम कह रहे हैं कि मैं आज भी एनडीए में शामिल हूँ। मेरी लड़ाई भाजपा से नहीं नीतीश कुमार के जदयू से है।

बिहार में विधानसभा के चुनाव बहुत ही रोचक स्थिति में पहुंच गये हैं। एनडीए की तरफ से नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित किया गया है। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा व केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने स्पष्ट तौर पर कह दिया है कि एनडीए दो तिहाई से अधिक सीटों पर चुनाव जीतेगा। एनडीए गठबंधन में शामिल दलों को कितनी भी सीटें मिलें अगले मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ही बनेंगे।

महागठबंधन की तरफ से मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार लालू यादव के छोटे पुत्र तेजस्वी यादव को बनाया गया है। उनके नेतृत्व में कांग्रेस सहित सभी वामपंथी दल चुनाव लड़ रहे हैं। महागठबंधन के नेता बनने के बावजूद तेजस्वी यादव को चुनावी प्रबंधन का अनुभव नहीं है। पिछले विधानसभा चुनाव में महागठबंधन लालू प्रसाद यादव के नेतृत्व में चुनाव लड़ा था। उस वक्त जनता दल

शेष पृष्ठ ६ पर....

में है। देखने कि बात है कि क्या दोनों समाजों की परिस्थितियाँ समान हैं या भिन्न।

बिहार के चुनाव में दस लाख नौकरी देना मुद्दा बना जो शायद कभी-कभार होता है, इसका परिणाम केवल बिहार में ही नहीं दिखेगा बल्कि पूरे देश में दिखेगा। अगर, बिहार के लोगों ने इस मुद्दे पर मतदान किया तब ऐसा देखने को मिल सकता है। यूरोप और अमेरिका के देश स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार आदि से पल्ला झाड़ सकते हैं चूंकि वहां उतनी असमानता नहीं है। हमारे यहाँ जाति व्यावस्था है और अभी भी बड़े आबादी के हिस्से को आज़ादी नहीं है कि वह किसी भी व्यापार और पेशे को जब चाहे अपना ले या छोड़ दे। दूसरी बात यह है कि उन देशों में धन एक ही पीढ़ी के लिए कमाया जाता है और अपवाद को छोड़कर के दुनिया से विदा होने के पहले लोग अपनी धन

सम्पत्ति को खत्म कर चुके होते हैं या सामाजिक कार्य में लगा देते हैं या दान दे देते हैं। इसके विपरीत हमारे यहाँ सात पीढ़ी के लिए धन कमाया जाता है। अतः समाज के बड़े हिस्से तक नहीं पहुच पाता है। हमारे यहाँ व्यक्ति स्वर्ग में जगह बनाने के लिए धन व्यय करेगा या आने वाली पीढ़ी के लिए इसलिए जितना ज्यादा हो कभी पूरा नहीं हो पाता। कभी दूसरों को देने या छोड़ने के लिए नहीं हो पाता।

जातीय एवं सामाजिक व्यवस्था ने उदारता के लिए बहुत कम जगह छोड़ी है। एक जमींदार के पास सौ एकड़

शेष पृष्ठ ६ पर....

लालू और पासवान

(यूनाइटेड) भी महागठबंधन में शामिल था। इस कारण महागठबंधन को दो तिहाई सीटों पर जीत मिली थी। अब मुख्यमंत्री नीतीश कुमार फिर से एनडीए में शामिल हो गये हैं। लालू प्रसाद यादव जेल में हैं। इस कारण मुकाबला तेजस्वी यादव बनाम नीतीश कुमार में हो गया है। नीतीश कुमार की पढ़े लिखे, अनुभवी व साफ छवि के मुकाबले कम पढ़े-लिखे तेजस्वी यादव बहुत हल्के नजर आ रहे हैं। महागठबंधन में शामिल कांग्रेस में भी कोई ऐसा नेता नहीं है जो नीतीश कुमार के मुकाबले कहीं ठहरता हो। वामपंथी दल तो लालू प्रसाद यादव के उदय के बाद से ही बिहार में अप्रासंगिक होते चले गए। भाकपा, माकपा ने तो महागठबंधन के भरोसे ही अपने प्रत्याशी मैदान में उतारे हैं। भाकपा माले का जरूर कुछ विधानसभा क्षेत्रों में असर है।

बिहार में 2015 के विधानसभा चुनाव में भाजपा को 24.42 प्रतिशत वोट व 53 सीटें, कांग्रेस को 6.66 प्रतिशत वोट व 27 सीटें, जदयू को 16.83 प्रतिशत वोट व 71 सीटें, आरजेडी को 18.35 प्रतिशत वोट व 81 सीटें, एलजेपी को 4.86 प्रतिशत वोट व 2 सीटें, हम को 2.27 प्रतिशत वोट व एक सीट, आरएलएसपी को 2.56 प्रतिशत वोट व 2 सीटें मिली थीं। वही सीपीआई माले को 1.54 प्रतिशत वोट व तीन सीटें मिली थीं। उस वक्त भाकपा को 1.36 प्रतिशत वोट, माकपा को 0.61 प्रतिशत वोट, एनसीपी को 0.49 प्रतिशत वोट मिले थे। मगर इन तीनों ही दलों के सभी प्रत्याशियों की जमानत जब्त हो गई थी। बिहार विधानसभा चुनाव में इस बार हर कोई मुख्यमंत्री पद की दावेदारी जता रहा है। नीतीश कुमार, तेजस्वी यादव, उषेंद्र कुशवाहा, चिराग पासवान के बाद अब पप्पू यादव भी मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार बन गये हैं। विधानसभा चुनाव में इस बार प्रायः सभी पार्टियां गठबंधन में शामिल होकर चुनाव लड़ रही हैं। इसलिये चुनाव में असली परीक्षा तो गठबंधनों की होगी। विधानसभा चुनावों के दौरान सीटों पर बात नहीं बनने पर कई दलों के नेताओं ने अपने पुराने साथी बदल लिये हैं। ऐसे में अब यह सवाल उठने लगा है कि क्या ये गठबंधन चुनाव परिणाम के बाद भी कायम रहेंगे या पिछली बार की तरह नये राजनीतिक समीकरण बनेंगे। खैर..इस बात का पता तो चुनाव परिणाम के बाद ही चल पायेगा।

भारत में सबसे ज्वलंत.....

जमीन अगर है तो न स्वयं मेहनत करेगा और ना ही भूमिहीन दलित या गरीब को उचित मजदूरी/ अधिया/ बटाईदारी देते हैं। जातीय भावना धन और संसाधन के समान वितरण में हजारों वर्ष से पक्षपाती रही है। चाहे स्वयं की हानि क्यों न हो अगर उससे कथित रूप से उनसे निम्न जाति का हो तो उसे खुशहाल नहीं देखना चाहेंगे। यह सोच केवल ग्राम क्षेत्र तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसकी बानगी कोपेरिट में भी देखी जा सकती है। ऐसी परिस्थितियों में राज्य का हस्तक्षेप न रहे तो करोड़ों युवा बेरोजगार तो होंगे ही। पकौड़ा तलना एक रोजगार है तो दलित आदिवासी के लिए यह भी अवसर तो नहीं है। जैसे ही पता लगेगा कि दलित, अछूत या कथित रूप से निम्न जाति का है उनका बहिष्कार हो जाएगा। बौद्धिक एवं सामाजिक सम्पदा जिसके पास हजारों वर्ष तक नहीं रही उसके उत्थान और भागीदारी से सरकार हाथ खींच ले तो उनका विकास कैसे संभव है। वास्तव में बिना कहे करना तो यही चाहते हैं कि हजारों वर्ष से दलित पिछड़े शासन-प्रशासन और संसाधन में भागीदार न बन पायें।

कोरोना महामारी से सबक लेने की जरूरत है कि निजी अस्पतालों ने किस तरह से मरीजों को लूटा है और लोगों को महसूस करा दिया कि सरकारी स्वास्थ्य व्यवस्था के बगैर इलाज संभव ही नहीं है। जो रेलवे प्लेटफार्म टिकट दो रूपये का था उसको पचास रूपये का कर दिया गया। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तेल की कीमत कौड़ियों के भाव है लेकिन यहाँ कीमत आसमान छू रही है। किसानों को अपने उत्पाद का कितना कम मूल्य मिल रहा है, शिक्षा कितनी महंगी हो गयी है। जब पूरे देश में अर्थव्यवस्था चौपट हो तो बड़े पूंजीपतियों के लाभ में बड़ा उछाल आया। जिन सेवाओं से सरकार ने पल्ला झाड़ा और निजी क्षेत्र को दिया महंगा होता गया। भारत को आज़ाद हुए सात दशक ही हुए इसलिए अभी दशकों तक राज्य को जीवन के तमाम उपयोगी या आवश्यकताओं को पूरा करने में हस्तक्षेप करना पड़ेगा। आने वाले चुनाव में रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य मुद्दा बनें ऐसी संभावनाएं दिखती हैं। अगर बिहार के चुनाव पर नजर डालें तो दस नवम्बर को और स्पष्टता आ जानी चाहिए।

वायु प्रदूषण के मुद्दे पर ट्रंप ने क्यों की भारत की आलोचना ? कितना होगा नुकसान ?

संविदा

जलवायु परिवर्तन के लिए अमेरिका बहुत हद तक जिम्मेदार है, लेकिन वह ट्रंप के नेतृत्व में अपनी जिम्मेदारी से मुंह मोड़कर दूसरों को दोष दे रहा है। कोरोना महामारी में सर्वाधिक विकसित देश ने जिस तरह की विनाशालीला देखी, वह भी वहां की शासन-व्यवस्था पर एक बड़ा प्रश्न बनी है।



अमेरिका में राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव बहुत दिलचस्प मोड़ पर पहुंच चुका है। तीन नवम्बर को अमेरिका की आम जनता नए राष्ट्रपति का चुनाव करने के लिए मतदान करेगी। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और उनके प्रतिद्वंद्वी जो बाइडेन के बीच सीधा मुकाबला है। इन चुनावों में भारतीय मूल के अमेरिकियों की भूमिका भी महत्वपूर्ण है, बावजूद इसके डोनाल्ड ट्रंप ने एक बार फिर भारत की जिस तरह आलोचना की है, वह न सिर्फ दुखद, विरोधाभासी बल्कि शुद्ध रूप से राजनीति प्रेरित है। भले ही इस आलोचना का कारण कोरोना महामारी एवं बढ़ते पर्यावरण संकटों का ट्रंप पर दबाव हो, अपने देश की जनता से जुड़े इस तरह के सवालों के सटीक जवाब न दे पाने की स्थिति में क्या भारत की आलोचना या चर्चा औचित्यपूर्ण है? इस तरह के बयान एवं आलोचना राजनीतिक अपरिपक्वता की तो परिचायक है ही, सोच के अंधेरे की भी द्योतक है। मतदाताओं को लुभाने के लिये इस तरह के अंधेरों की नहीं, बल्कि रोशनी की जरूरत होती है। 'रोशनी' एक बहुत सीधी-सादी लेकिन कुछ बेवफा किस्म की चीज है। वह एक-न-एक दिन सबको गंगा कर देती है। उनको तो जरूर ही जो उसे आवरणों में कैद रखना चाहते हैं।

राजनीति के हमाम में सब नंगे हैं एवं राजनीति में सब कुछ जायज है, को डोनाल्ड ट्रंप ने भी अमेरिका में चल रहे युद्धस्तरीय चुनाव प्रचार में चरितार्थ कर दिया। भारत की आलोचना वाले डोनाल्ड ट्रंप के उद्गार, 'चीन को देखो, कितना गंदा है। रूस को देखो, भारत को देखो, ये बहुत गंदे हैं, हवा गंदी है।' आश्चर्यकारी है इस तरह बेवजह भारत की चर्चा का होना। यह सर्वविदित है कि अनेक अवसरों पर ट्रंप भारत और भारतीयों को अपना मित्र या सहयोगी बता चुके हैं। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अमेरिका में बसे भारतीयों का एक बड़ा आयोजन इसलिये कर चुके हैं कि ट्रंप को भारतीयों का सहारा मिले। मोदी और ट्रंप की दोस्ती भी परवान चढ़ती रही है, भारत और अमेरिका के संबंधों में निकटता के साथ-साथ आपसी हितों के दर्शन भी होते रहे हैं, ट्रंप यह मानकर चल रहे हैं कि अमेरिका में उन्हें भारतीय मूल के अमेरिकियों के ज्यादा वोट मिलेंगे, लेकिन तब भी क्या उन्हें प्रदूषण या पर्यावरण के मामले में भारत की निंदा करनी चाहिए थी? बेशक, इसमें भारत के साथ रूस और चीन को भी उन्होंने लपेटा है, लेकिन उनका भारत पर

विशेष रूप से जोर देना बहुत लोगों को नागवार गुजरा है। ट्रंप के द्वारा भारत की इस तरह आलोचना करना अमेरिका की राजनीति में उनके विरुद्ध भी जा सकता है। अमेरिका में राष्ट्रपति पद के लिए होने वाली सीधी बहस का यह आखिरी दौर था और इसमें भारत का नाम लेकर आलोचना करना और पर्यावरण संबंधी अपनी नीतियों का बेशर्म बचाव करने की कोशिश करना अनुचित ही नहीं, शर्मनाक भी है।

प्रश्न यह है कि ट्रंप के द्वारा भारत की इस तरह आलोचना करने का क्या यह उचित अवसर था? क्या ट्रंप को इस बात का एहसास हो गया है कि भारतीय मूल के ज्यादातर अमेरिकी मतदाता डेमोक्रेट उम्मीदवार जो बाइडेन के पक्ष में मतदान करने वाले हैं? विरोध की राजनीति को अपने पक्ष में करने का यह तरीका ट्रंप के लिये नुकसानदेह ही साबित होता हुआ प्रतीत हो रहा है। इसका तत्काल प्रभाव तो ट्रंप को अपने देश में ही देखने को मिल गया है। उनके भारत विरोधी बयान को न केवल भ्रामक करार दिया गया है, बल्कि बिना सोचे-समझे इस तरह के बयान को निराशाजनक एवं दुर्भाग्यपूर्ण भी माना गया है। भारत भले ही प्रदूषित देशों में शुमार है, जलवायु परिवर्तन के लिये जिम्मेदार देशों में भारत की भी भूमिका हो सकती है, लेकिन जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण एवं प्रदूषण के मामलों में अमेरिका की वर्तमान शासन व्यवस्था भी कम दोषी नहीं है। इसलिये अपनी कमियों को ढंकने के लिये दूसरों को दोषी ठहराने की नीति उचित नहीं कहीं जा सकती। इसलिये जब जलवायु परिवर्तन के लिए जिम्मेदार देशों की बात आती है, तो ट्रंप की टिप्पणी खरी नहीं उतरती।

वस्तुस्थिति तो यह है कि जलवायु परिवर्तन के लिए अमेरिका बहुत हद तक जिम्मेदार है, लेकिन वह ट्रंप के नेतृत्व में अपनी जिम्मेदारी से मुंह मोड़कर दूसरों को दोष दे रहा है। कोरोना महामारी में सर्वाधिक विकसित देश ने जिस तरह की विनाशालीला देखी, वह भी वहां की शासन-व्यवस्था पर एक बड़ा प्रश्न बनी है, तभी डोनाल्ड ट्रंप ने स्वीकारा है कि न्यूयॉर्क भूतिया शहर में बदल रहा है। देश को बंद नहीं कर सकते, ऐसा होने से तो देश के लोग आत्महत्या करना शुरू कर देंगे। कोरोना वायरस से अमेरिका में हुई मौतों पर ट्रंप ने कहा कि यह मेरी गलती नहीं है, यह जो बाइडेन की भी गलती नहीं है, यह

समझौते, निकटता एवं दोस्ताना संबंध तो मोदी एवं ट्रंप के शासन काल में ही नयी ऊर्जा एवं आभा के साथ परवान चढ़े। नरेंद्र मोदी एवं ट्रंप ने एक स्थायी द्विपक्षीय रिश्ते को आकार देने की कोशिशें की हैं। मगर राजनीतिक अनुकूलता और रणनीतिक संस्कृति के लिहाज से अमेरिका व भारत के रिश्ते क्या अब भी बहुत सहज नहीं हैं? ट्रंप के द्वारा भारत की आलोचना का क्या अर्थ है? जाहिर है, ट्रंप द्वारा किए गए प्रहार के बाद अब डेमोक्रेट पूरी तरह से भारत के पक्ष में खड़े दिख रहे हैं, उन्होंने कहा है कि ट्रंप हमारे दक्षिण एशियाई समुदाय की जीवन्तता, सुंदरता और विविधता का सम्मान नहीं करेंगे।

अमेरिका में हो रहे चुनावों एवं उभर रहे मुद्दों के बीच भारतीय मूल के लोगों को संतुलन रखने की अपेक्षा है, भारत को आधिकारिक रूप से अमेरिकी राजनीति में सक्रिय एवं निर्णायक भागीदारी से बचना चाहिए, यह जाहिर है कि ट्रंप की इस ताजा आलोचना से भारतीय मूल के लोगों पर विपरीत प्रभाव पड़ा है, वह न चाहते हुए भी ट्रंप से दूर चले जाएंगे। ऐसे माहौल में भारतीय विशेषज्ञों को यह बात अवश्य जोर देकर बतानी चाहिए कि जलवायु परिवर्तन में भारत या किस देश का कितना योगदान है। पर्यावरण प्रदूषण एवं जलवायु परिवर्तन किसी एक देश की समस्या नहीं है, यह दुनिया की उभरती हुई ज्वलंत समस्या है, इसके समाधान के लिये सभी देशों को प्रयत्न करने की जरूरत है।

भारत के लिये यह सही समय है, भले ही ट्रंप की आलोचना हमारे लिये नागवार गुजरी हो, लेकिन इन ज्वलंत समस्याओं के सन्दर्भ में भारत को अपनी कोशिशों पर गौर करना चाहिए और ज्यादा व्यावहारिक बनना चाहिए। दुनिया के प्रदूषित देशों में हमारी गिनती होना, हमारे लिये चिन्तनीय है, हमारी बढ़ती विश्व छवि पर एक अवरोध भी है, इसलिये हमें अपने देश को इन प्रदूषित देशों की सूची से हटाने के लिये तत्पर होना चाहिए। अपने तेज विकास के लिए युद्ध स्तर पर बढ़ते प्रदूषण का उपचार करना जरूरी हो गया है। पराली की गंदगी हो या यातायात प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन हो या बढ़ता प्रकृति का दोहन-हम दुनिया को आलोचना का मौका कब तक देते रहेंगे? कुछ ऐसी धुंध छा गई है कि लोगों को मालूम नहीं कि सवेरा होने वाला है या रात?

तुष्टिकरण की राजनीति से मुक्ति पाने की ओर बढ़ चला है असम

संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर कहते थे कि जो बालक एवं मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा का सर्वांगीण और सर्वोत्कृष्ट विकास करे वो ही शिक्षा है। राष्ट्रीय शिक्षा आयोग 1964-66 के अनुसार शिक्षा राष्ट्र के आर्थिक एवं सामाजिक विकास की शक्तिशाली साधन है।



डॉ. भीमराव अंबेडकर

असम सरकार ने हाल ही में घोषणा की है कि अगले माह यानी नवंबर में वो राज्य में राज्य संचालित सभी मदरसों और संस्कृत टोल्स या संस्कृत केंद्रों को बंद करने संबंधी एक अधिसूचना लाने जा रही है। इस फैसले के अंतर्गत असम सरकार द्वारा संचालित या फिर यूँ कहा जाए, सरकार द्वारा फंडेड मदरसों और टोल्स को अगले पाँच महीनों के भीतर नियमित स्कूलों के रूप में पुनर्गठित किया जाएगा। यह फैसला सरकार द्वारा लिए जाने का कारण स्पष्ट करते हुए असम के शिक्षा मंत्री ने कहा कि, 'एक धर्मनिरपेक्ष सरकार का काम धार्मिक शिक्षा प्रदान करना नहीं है। हम धार्मिक शिक्षा के लिए सरकारी फण्ड खर्च नहीं कर सकते।' इसके अलावा उन्होंने कहा कि अब वो आधुनिक शिक्षा को बढ़ावा देगी इसलिए मदरसा बोर्ड को भंग कर संस्थानों के शिक्षाविद माध्यमिक शिक्षा बोर्ड को सौंप दिए जाएंगे। प्रदेश में चलने वाले प्राइवेट मदरसों के बारे में उन्होंने स्पष्ट किया कि वे चलते रहेंगे। असम सरकार की इस घोषणा के साथ ही इसका व्यापक विरोध और राजनीति शुरू हो गई है। इसे क्या कहा जाए कि इस देश की राजनीति कभी निज स्वार्थ से ऊपर उठ ही नहीं पाई। हमारे राजनेता स्वार्थ की राजनीति से ऊपर उठ कर सोच ही नहीं पाते या सोचना नहीं चाहते।

राजनीति से इतर अगर बात की जाए तो मदरसा दरअसल किसी भी प्रकार के शैक्षणिक संस्थान के लिए प्रयुक्त अरबी शब्द है। अतः मदरसों की बात करने से पहले शिक्षा की बात कर लेते हैं। संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर कहते थे कि जो बालक एवं मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा का सर्वांगीण और सर्वोत्कृष्ट विकास करे वो ही शिक्षा है। राष्ट्रीय शिक्षा आयोग 1964-66 के अनुसार शिक्षा राष्ट्र के आर्थिक एवं सामाजिक विकास की शक्तिशाली साधन है। वहीं नई शिक्षा नीति में आज की आवश्यकताओं के अनुरूप हमारे युवाओं की क्वालिटी और इन्वोल्वमेंट को बढ़ाते हुए उनमें कौशल विकास पर विशेष बल दिया गया है ताकि अधिक से अधिक युवा आत्मनिर्भर बनकर राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दें।

अब अगर मदरसों की बात की जाए तो सत्य तो यह है कि सरकार से ज्यादा मदरसे चलाने वालों को खुद मदरसों की शिक्षा व्यवस्था पर विचार करने की बेहद आवश्यकता है। हाल ही में जियाउल्लाह और डॉ. एम असलम परवेज़ की किताब 'मदरसाज़ इन द ऐज ऑफ इस्लामोफोबिया' प्रकाशित हुई है जिसमें बताया गया है कि वर्तमान में किस प्रकार मदरसे मुश्किल दौर से गुज़र रहे हैं और विभिन्न चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। उनके अनुसार वहाँ पढ़ाई जाने वाली फ़िक्ह (इस्लामिक विधि) की शैली भाषा और उदाहरण प्राचीनकालीन हो चुके हैं। इनके अनुसार ज्यादातर मदरसे दर्से निज़ामी की तालीम देते हैं जिसका निर्धारण कोई 300 साल पहले किया गया था। इसमें आधुनिक विचारों का समावेश नाम मात्र नहीं मिलता। लेखकों के अनुसार परिणामस्वरूप 2019 या 2020 में मदरसों का पाठ्यक्रम वही है जो 1870 में था। बात इतनी ही नहीं है बल्कि बात यह भी है कि इन मदरसों से निकले ज्यादातर ग्रेजुएट स्तर के विद्यार्थियों को कहीं ढंग का रोजगार भी नहीं मिलता।

सचचर कमेटी ने भी अपनी रिपोर्ट में मुसलमानों को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा उपलब्ध कराना एवं मदरसों के आधुनिकीकरण की सिफारिश की थी। वहीं कुछ समय पहले शिया वक्फ़ बोर्ड के अध्यक्ष वसीम रिजवी ने भी प्रधानमंत्री मोदी को चिट्ठी लिखकर कहा था कि मदरसों में शिक्षित युवा रोज़गार के मोर्चे पर अनुत्पादक होते हैं क्योंकि उनकी डिग्रियां सभी जगह मान्य नहीं होतीं। इसलिए उन्होंने मांग की थी कि मदरसे खत्म करके कॉमन एडुकेशन पालिसी लागू करनी चाहिए। तथ्य यह भी है कि एक रिसर्च में यह बात सामने आई थी कि मदरसों से शिक्षा लेने वाले युवाओं में से मात्र 2% युवा ही उच्च शिक्षा में रुचि रखते हैं, 42% भविष्य में इस्लाम का ही प्रचार करना चाहते हैं, 16% मदरसों में ही शिक्षक बनना चाहते हैं, 8% इस्लाम की सेवा करना चाहते हैं, 30% समाज सेवा और 2% धर्मगुरु बनना चाहते हैं। यानी विज्ञान तकनीक अथवा अनुसंधान के प्रति रुचि का तो प्रश्न ही नहीं। अगर यह कहा जाए कि इन परिस्थितियों के लिए हमारे देश के राजनैतिक दल दोषी हैं तो गलत नहीं होगा। विगत 70 सालों से इस देश का मुसलमान इन दलों के लिए केवल वोट बैंक बना रहा और इनकी शिक्षा जिसे इनकी उन्नति की राहें खुलतीं तुष्टिकरण की राजनीति की भेंट चढ़ा दी गई। राष्ट्रीय सांख्यिकीय विभाग द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार भारत में केवल 48% मुसलमान बच्चे बारहवीं तक की शिक्षा ले पाते हैं और मात्र 14% बारहवीं से आगे की शिक्षा। इन परिस्थितियों में अगर देश का एक राज्य मदरसों की सदियों पुरानी व्यवस्था से इतर मुख्यधारा की आधुनिक शिक्षा की नींव रखने की पहल करता है तो राज्य सरकार के इस कदम को राजनैतिक चश्मे से देखने के बजाए खुले एवं व्यापक दृष्टिकोण से देखना चाहिए।

जन्नत में फिर जहर घोलना चाहता है कश्मीरी नेता

डॉ. रमेश जगद

नजरबंदी से मुक्त हुए कश्मीरी नेताओं ने फिर मोर्चा बंदी शुरू कर दी है। कश्मीर घाटी हिंदुस्तान की जन्नत है। लेकिन दुर्भाग्य से उस जन्नत में आजादी से ही जहर घुला हुआ था। पर, बीते बारह-चौदह महीनों में वहाँ की आबोहवा खुली फिजाओं में सांस ले रही है। पिछले वर्ष पाँच अगस्त को जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 व 35ए निरस्त होने के बाद समूचे प्रदेश का माहौल बदला। जिन चाक-चौराहों और गलियों में कभी सिर्फ खून के निशान दिखाई पड़ते थे, वहाँ अब प्रकृतिक सुंदरता की सौंधी सुगंध महकती है। लेकिन एक बार फिर उस जन्नत में जहर घोलने की कोशिशें होने लगी हैं। जम्मू-कश्मीर के एकीकरण के लिए कश्मीर केंद्रित राजनीतिक दलों ने आपस में हाथ मिलाया है। बंदी से

खतम करके कश्मीरी नेता जैसे ही बाहर निकले, तो उन्होंने दरवाजों पर सुरक्षा कर्मियों का भारी हुजूम देखा और समझ गए पूरे माजरे को। इतना समझ गए कि उनकी कोई भी प्लानिंग अब आसानी से कारगर साबित नहीं होने वाली। जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 हटने और नेताओं को नजर बंद से मुक्त कराने के बाद ये उनकी पहली बड़ी बैठक थी। लेकिन कहानी फिर वहीं से दोहराई जहाँ पिछले साल चार अगस्त को छोड़ी थी।

कश्मीर को जब अनुच्छेद 370 से मुक्ति के लिए दिल्ली में प्रधानमंत्री और गृह मंत्री में सुगबुगाहट हो रही थी तो उसकी भनक कश्मीरी नेताओं को हो गई थी। वह भी केंद्र सरकार को घेरने के लिए घेराबंदी का प्लान बना रहे

खुदा न खास्ता अगर विधानसभा के चुनाव होते हैं तो जनता को ये नेता रिझा लेंगे? जनसमर्थन मिलने के बाद ये लोग ना चाहते हुए भी केंद्र सरकार पर दबाव बनाना शुरू कर देंगे। एक बात और जो समझ से परे है, वह है पूरे घटनाक्रम पर कांग्रेस की चुप्पी बनी हुई है। कश्मीरी नेता सोनिया गांधी से समर्थन मांग रहे हैं, लेकिन उन्हें मुकम्मल जवाब नहीं मिल रहा। सोनिया गांधी के अलावा कांग्रेस के अन्य नेताओं ने भी फिलहाल इस कवायद से दूरी बना ली है। दिल्ली के अलावा जम्मू का भी कोई राजनेता फारूख अब्दुल्ला की बैठक में शामिल नहीं हुआ।

खुफ़िया एजेंसियों के पास ऐसे इनपुट हैं जिसमें कश्मीरी नेता फिर से प्रदेश में उपद्रव कराने

वादी में आग लगाने के लिए फारूख-महबूबा व अन्य कश्मीरी नेताओं के बीच बैठकों का दौर जारी है। बीते गुरुवार को सुबह और शाम में लगातार दो बैठकें हुईं, जिसमें जम्मू-कश्मीर के तमाम छोटे-बड़े सियासी दलों के बीच 'गुप्त चर्चाएं होती रहीं।



आजाद होने के बाद दोनों पूर्व मुख्यमंत्रियों फारूख अब्दुल्ला और महबूबा मुफ्ती ने कश्मीर में फिर से माहौल बिगाड़ने की सामूहिक साजिशें रचनी शुरू की हैं?

वादी में आग लगाने के लिए फारूख-महबूबा व अन्य कश्मीरी नेताओं के बीच बैठकों का दौर जारी है। बीते दिनों को सुबह और शाम में लगातार दो बैठकें हुईं, जिसमें जम्मू-कश्मीर के तमाम छोटे-बड़े सियासी दलों के बीच 'गुप्त चर्चाएं होती रहीं, जिसमें प्रमुख रूप से नेशनल कॉन्फ्रेंस, पीडीपी पार्टी के नेता शामिल हुए। चेहरे सभी के मुरझाए हुए थे। ठीक वैसे ही जैसे घायल गीदड़ जब ठीक होकर बाहर निकलता है और पुराने दर्द को याद करके कराहता है। चौदह महीनों की बंदी से मुक्त हुए सभी नेताओं ने एक सुर में फिर से अनुच्छेद 370 और 35ए को बहाल करने की मांग उठाई, यह सभी अपने लिए पहले जैसा वातावरण चाहते हैं। पर, शायद ये संभव नहीं? पर हां इतना जरूर है वह इन हरकतों से अपनी जगहसाईं जरूर करवा रहे हैं।

बहरहाल, जम्मू में इस समय नेताओं के बीच जो खिचड़ी पक रही है उसकी भनक दिल्ली की सियासत को है। केंद्र की पैनी नजर उनकी प्रत्येक हलचलों पर है। तभी तो चलती बैठक के बीच दिल्ली से जम्मू-कश्मीर के उप राज्यपाल मनोज सिन्हा को कड़ी सुरक्षा व्यवस्था करने को कह दिया गया। बैठक

थे। लेकिन सरकार ने उनको उतना मौका ही नहीं दिया गया। सब कुछ गुप्त प्लानिंग के साथ बहुत जल्दी किया गया। करीब सौ से ज्यादा कश्मीरी नेताओं को जो जिस हाल में था, उन्हें घरों में कैद कर दिया। बंदी के बाद घर के बाहर सख्त पहरेदारी बिठा दी। सुरक्षा के इतने तगड़े बंदोबस्त किए गए कि परिंदा भी पर नहीं मार सकता था। लेकिन इसी सप्ताह वहाँ की पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती, सज्जाद लोन, यूसुफ तारिगामी और फारूख अब्दुल्ला की जैसे ही नजदबंदी हटाई गई उन्होंने बाहर आते ही उछलकूद मचाना शुरू कर दिया। बंदी से आजाद होने के बाद महबूबा मुफ्ती का आतंक को शहीद बताना और फारूख अब्दुल्ला का चीन के प्रति अपने मंसूबों को उजागर करने के पीछे की मंशा को केंद्र सरकार ने भांपने में देर नहीं की। फारूख अब्दुल्ला जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 बहाल करने की मांग को लेकर चीन से समर्थन मांगने की बात कह चुके हैं जिसके लिए उनकी पूरे देश में थू-थू और जमकर आलोचना भी हो रही है। बहरहाल, सभी कश्मीरी नेताओं की हरकतों पर पैनी नजर बनी हुई है। अगर हरकतें बर्दाश्त से बाहर हुईं तो हो सकता है उनकी नजर बंदी दोबारा से बढ़ा दी जाए। लेकिन इतना तय है केंद्र सरकार अपने फैसले से रती भर भी इधर-उधर नहीं होने वाली। फारूख अब्दुल्ला जैसे नेताओं की मांगों को हुकूमत नजरअंदाज करके ही चलेगी। केंद्र सरकार को वहाँ अभी राज्यपाल शासन लगे रहने देना चाहिए, क्योंकि

की साजिश में हैं। माहौल फिर से बिगड़ने के आसार दिखाई पड़ते हैं। कश्मीरी नेताओं के खिलाफ स्थानीय भाजपा कार्यकर्ताओं ने भी विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया है। हालांकि मामला बहुत ही संवेदनशील है, उन्हें इससे बचना चाहिए। कश्मीर में जिन नेताओं ने अभी तक जहर फैला कर राजनीति की थी, उन सभी नेताओं के लिए माहौल अब पहले जैसा नहीं रहा। यही वजह है कि नजर बंदी से आजाद होने के बाद फारूख-महबूबा जैसे लोग बदले माहौल में राजनीति की नई राह तलाश रहे हैं।

करीब एक साल नजर बंदी में रहने के बाद अब फारूख अब्दुल्ला, उमर अब्दुल्ला और महबूबा मुफ्ती अपने रूतबे को पाने के लिए तड़फड़ा रहे हैं। नजर बंदी के बाद का माहौल उन्हें बदला हुआ दिख रहा है। न समर्थक दिखाई पड़ते हैं, न ही कार्यकर्ताओं की उनके पक्ष में नारेबाज़ी, सब कुछ नदारद है। पाकिस्तान जो कभी उनका खुलकर समर्थन करता था, उसकी हालत भी पहले से अब पतली है। वहाँ फांके पड़े हैं, पाकिस्तान की इमरान सरकार कब धराशायी हो जाए, खुद प्रधानमंत्री इमरान खान को भी पता नहीं? ऐसे में कश्मीरी नेताओं का अलग-थलग पड़ जाना स्वाभाविक-सा है। जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 की बहाली और राज्य के एकीकरण के मुद्दे पर बेशक फारूख और महबूबा मुफ्ती ने हाथ मिलाया हो, पर होने वाला कुछ नहीं?

(कहानी)

प्रायश्चित



दफ्तर में जरा देर से आना अफसरों की शान है। जितना ही बड़ा अधिकारी होता है, उत्तरी ही देर में आता है; और उतने ही सबेरे जाता भी है। चपरासी की हाजिरी चौबीसों घंटे की। वह छुट्टी पर भी नहीं जा सकता। अपना एवज देना पड़ता है। खैर, जब बरेली जिला-बोर्ड के हेड क्लर्क बाबू मदारीलाल ग्यारह बजे दफ्तर आये, तब मानो दफ्तर नींद से जाग उठा। चपरासी ने दौड़ कर पैरगाड़ी ली, अरदली ने दौड़कर कमरे की चिक उठा दी और जमादार ने डाक की किश्त मेज पर ला कर रख दी। मदारीलाल ने पहला ही सरकारी लिफाफा खोला था कि उनका रंग फक हो गया। वे कई मिनट तक आश्चर्यान्वित हालत में खड़े रहे, मानो सारी ज्ञानेन्द्रियाँ शिथिल हो गयी हों। उन पर बड़े-बड़े आघात हो चुके थे; पर इतने बहदवास वे कभी न हुए थे। बात यह थी कि बोर्ड के सेक्रेटरी की जो जगह एक महीने से खाली थी, सरकार ने सुबोधचन्द्र को वह जगह दी थी और सुबोधचन्द्र वह व्यक्ति था, जिसके नाम ही से मदारीलाल को घृणा थी। वह सुबोधचन्द्र, जो उनका सहपाठी था, जिस जक देने को उन्होंने कितनी ही चेष्टा की; पर कभी सफल न हुए थे। वही सुबोध आज उनका अफसर होकर आ रहा था। सुबोध की इधर कई सालों से कोई खबर न थी। इतना मालूम था कि वह फौज में भरती हो गया था। मदारीलाल ने समझा-वहीं मर गया होगा; पर आज वह मानों जी उठा और सेक्रेटरी होकर आ रहा था। मदारीलाल को उसकी मातहत में काम करना पड़ेगा। इस अपमान से तो मर जाना कहीं अच्छा था। सुबोध को स्कूल और कालेज की सारी बातें अवश्य ही याद होंगी। मदारीलाल ने उसे कालेज से निकलवा देने के लिए कई बार मंत्र चलाए, झूठे आरोज किये, बदनाम किया। क्या सुबोध सब कुछ भूल गया होगा? नहीं, कभी नहीं। वह आते ही पुरानी कसर निकालेगा। मदारी बाबू को अपनी प्राणरक्षा का कोई उपाय न सूझता था।

मदारी और सुबोध के ग्रहों में ही विरोध था दोनों एक ही दिन, एक ही शाला में भरती हुए थे, और पहले ही दिन से दिल में ईष्वा और द्वेष की वह चिनगारी पड़ गयी, जो आज बीस वर्ष बीतने पर भी न बुझी थी।

सुबोध का अपराध यही था कि वह मदारीलाल से हर एक बात में बढ़ा हुआ था डील-डौल, रंग-रूप, रीति-व्यवहार, विद्या-बुद्धि ये सारे मैदान उसके हाथ थे। मदारीलाल ने उसका यह अपराध कभी क्षमा नहीं किया सुबोध बीस वर्ष तक निरन्तर उनके हृदय का काँटा बना रहा। जब सुबोध डिग्री लेकर अपने घर चला गया और मदारी फेल होकर इस दफ्तर में नौकर हो गये, तब उनका चित शांत हुआ। किन्तु जब यह मालूम हुआ कि सुबोध बसरे जा रहा है, जब तो मदारीलाल का चेहरा खिल उठा। उनके दिल से वह पुरानी फाँस निकल गयी। पर हा हतभाग्य! आज वह पुराना नासूर शतगुण टीस और जलन के साथ खुल गया। आज उनकी किस्मत सुबोध के हाथ में थी। ईश्वर इतना अन्यायी है! विधि इतना कठोर!

जब जरा चित शांत हुआ, तब मदारी ने दफ्तर के क्लर्कों को सरकारी हुक्म सुनाते हुए कहा- अब आप लोग जरा हाथ-पाँव सँभाल कर रहिएगा। सुबोधचन्द्र वे आदमी नहीं हैं, जो भूलो को क्षम कर दें?

एक क्लर्क ने पूछा-क्या बहुत सख्त है।

मदारीलाल ने मुस्करा कर कहा-वह तो आप लोगों को दो-चार दिन ही में मालूम हो जाएगा। मैं अपने मुँह से किसी की क्यों शिकायत करूँ? बस, चेतावनी देदी कि जरा हाथ-पाँव सँभाल कर रहिएगा। आदमी योग्य है, पर बड़ा ही क्रोधी, बड़ा दम्भी। गुस्सा तो उसकी नाक पर रहता है। खुद हजारों हजम कर जाए और डकार तक न ले; पर क्या मजाल कि कोई मातहत एक कौड़ी भी हजम करने जाए। ऐसे आदमी से ईश्वर ही बचाये! मैं तो सोच रहा हूँ कि छुट्टी लेकर घर चला जाऊँ। दोनों वक्त घर पर हाजिरी बजानी होगी। आप लोग आज से सरकार के नौकर नहीं, सेक्रेटरी साहब के नौकर हैं। कोई उनके लड़के को पढ़ायेगा। कोई बाजार से सौदा-सुलुफ लायेगा और कोई उन्हें अखबार सुनायेगा। ओर चपरासियों के तो शायद दफ्तर में दर्शन ही न हों।

इस प्रकार सारे दफ्तर को सुबोधचन्द्र की तरफ से भड़का कर मदारीलाल ने अपना

कलेजा ठंडा किया।

इसके एक सप्ताह बाद सुबोधचन्द्र गाड़ी से उतरे, तब स्टेशन पर दफ्तर के सब कर्मचारियों को हाजिर पाया। सब उनका स्वागत करने आये थे। मदारीलाल को देखते ही सुबोध लपक कर उनके गले से लिपट गये और बोले-तुम खूब मिले भाई। यहाँ कैसे आये? ओह! आज एक युग के बाद भेंट हुई!

मदारीलाल बोले-यहाँ जिला-बोर्ड के दफ्तर में हेड क्लर्क हूँ। आप तो कुशल से है?

सुबोध-अजी, मेरी न पूछो। बसरा, फ्रांस, मिश्र और न-जाने कहाँ-कहाँ मारा-मारा फिर। तुम दफ्तर में हो, यह बहुत ही अच्छा हुआ। मेरी तो समझ ही मे न आता था कि कैसे काम चलेगा। मैं तो बिलकुल कोरा हूँ; मगर जहाँ जाता हूँ, मेरा सौभाग्य ही मेरे साथ जाता है। बसरे में सभी अफसर खूश थे। फ्रांस में भी खूब चैन किये। दो साल में कोई पचीस हजार रुपये बना लाया और सब उड़ा दिया। तौ से आकर कुछ दिनों को-आपरेशन दफ्तर में मटरगश्त करता रहा। यहाँ आया तब तुम मिल गये। (क्लर्कों को देख कर) ये लोग कौन हैं?

मदारीलाल के हृदय में बछियाँ-सी चल रही थीं। दुष्ट पचीस हजार रुपये बसरे में कमा लाया! यहाँ कलम घिसते-घिसते मर गये और पाँच सौ भी न जमा कर सके। बोले-कर्मचारी हैं। सलाम करने आये है।

सबोध ने उन सब लोगों से बारी-बारी से हाथ मिलाया और बोला-आप लोगों ने व्यर्थ यह कष्ट किया। बहुत आभारी हूँ। मुझे आशा है कि आप सब सज्जनों को मुझसे कोई शिकायत न होगी। मुझे अपना अफसर नहीं, अपना भाई समझिए। आप सब लोग मिल कर इस तरह काम कीजिए कि बोर्ड की नेकनामी हो और मैं भी सुखरू रहूँ। आपके हेड क्लर्क साहब तो मेरे पुराने मित्र और लँगोटिया यार है।

एक वाकचतुर क्लर्क ने कहा-हम सब हुजूर के ताबेदार हैं। यथाशक्ति आपको असंतुष्ट न करेंगे; लेकिन आदमी ही है, अगर कोई

भूल हो भी जाए, तो हुजूर उसे क्षमा करेंगे।

सुबोध ने नम्रता से कहा-यही मेरा सिद्धान्त है और हमेशा से यही सिद्धान्त रहा है। जहाँ रहा, मतहतों से मित्रों का-सा बर्ताव किया। हम और आप दोनों ही किसी तीसरे के गुलाम हैं। फिर रोब कैसा और अफसरी कैसी? हाँ, हमें नेकनीयत के साथ अपना कर्तव्य पालन करना चाहिए।

जब सुबोध से विदा होकर कर्मचारी लोग चले, तब आपस में बातें होनी लगीं-

‘आदमी तो अच्छा मालूम होता है।’

‘हेड क्लर्क के कहने से तो ऐसा मालूम होता था कि सबको कच्चा ही खा जायगा।’

‘पहले सभी ऐसे ही बातें करते है।’

‘ये दिखाने के दाँत है।’

सुबोध को आये एक महीना गुजर गया। बोर्ड के क्लर्क, अरदली, चपरासी सभी उसके बर्वाव से खुश हैं। वह इतना प्रसन्नचित है, इतना नम्र है कि जो उससे एक बार मिला है, सदैव के लिए उसका मित्र हो जाता है। कठोर शब्द तो उनकी जबान पर आता ही नहीं। इनकार को भी वह अप्रिय नहीं होने देता; लेकिन द्वेष की आँखों में गुण ओर भी भयंकर हो जाता है। सुबोध के ये सारे सदगुण मदारीलाल की आँखों में खटकते रहते हैं। उसके विरुद्ध कोई न कोई गुप्त षडयंत्र रचते ही रहते हैं। पहले कर्मचारियों को भड़काना चाहा, सफल न हुए। बोर्ड के मेम्बरों को भड़काना चाहा, मुँह की खायी। ठेकेदारों को उभारने का बीड़ा उठाया, लज्जित होना पड़ा। वे चाहते थे कि भुस में आग लगा कर दूर से तमाशा देखें। सुबोध से यों हँस कर मिलते, यों चिकनी-चुपड़ी बातें करते, मानों उसके सच्चे मित्र है, पर घात में लगे रहते। सुबोध में सब गुण थे, पर आदमी पहचानना न जानते थे। वे मदारीलाल को अब भी अपना दोस्त समझते हैं।

एक दिन मदारीलाल सेक्रेटरी साहब के कमरे में गए तब कुर्सी खाली देखी। वे किसी काम

सुबोध को आये एक महीना गुजर गया।

बोर्ड के क्लर्क, अरदली, चपरासी सभी उसके बर्वाव से खुश हैं। वह इतना प्रसन्नचित है, इतना नम्र है कि जो उससे एक बार मिला है, सदैव के लिए उसका मित्र हो जाता है।

कठोर शब्द तो उनकी जबान पर आता ही नहीं। इनकार को भी वह अप्रिय नहीं होने देता; लेकिन द्वेष की आँखों में गुण ओर भी भयंकर हो जाता है।

सुबोध के ये सारे सदगुण मदारीलाल की आँखों में खटकते

रहते हैं। उसके विरुद्ध कोई न कोई गुप्त षडयंत्र रचते ही रहते हैं। पहले

कर्मचारियों को भड़काना चाहा, सफल न हुए। बोर्ड के

मेम्बरों को भड़काना चाहा, मुँह की खायी। ठेकेदारों को उभारने

का बीड़ा उठाया, लज्जित होना पड़ा। वे चाहते थे कि भुस में

आग लगा कर दूर से तमाशा देखें। सुबोध से यों हँस कर

मिलते, यों चिकनी-चुपड़ी बातें करते, मानों उसके सच्चे

मित्र है, पर घात में लगे रहते। सुबोध में सब गुण थे, पर

आदमी पहचानना न जानते थे। वे मदारीलाल को अब

भी अपना दोस्त समझते हैं।

मदारीलाल सेक्रेटरी

साहब के कमरे में

गाए तब कुर्सी खाली

देखी। वे किसी काम

से बाहर चले गए

थे। उनकी मेज पर

पाँच हजार के नोट

पुलियों में बँधे हुए

रखे थे। बोर्ड के

मदरसों के लिए

कुछ लकड़ी के

सामान बनवाये

गये थे। उसी के

दाम थे। ठेकेदार

वसूली के लिए

बुलया गया था।

आज ही सेक्रेटरी

साहब ने चेक मेज

कर खजाने से

रूपये मँगवाये थे।

मदारीलाल ने

बरामदे में झाँक

कर देखा, सुबोध

का कहीं जाता नहीं।

उनकी नीयत बदल

गयी। दर्प्या में

लोम का सज्मिश्रण

हो गया। काँपते हुए

हाथों से पुलिंदे

उठाये; पतलून की

दोनों जेबों में भर

कर तुरन्त कमरे

से निकले और

चपरासी को पुकार

कर बोले-बाबू जी

भीतर है? चपरासी

आप ठेकेदार से

कुछ वसूल करने

की खुशी में फूला

हुआ था। सामने

वाले तमोली के

दूकान से आकर

बोला-जी नहीं,

कचहरी में किसी से

बातें कर रहे है।

अमी-अमी तो गये

हैं।

से बाहर चले गए थे। उनकी मेज पर पाँच हजार के नोट पुलियों में बँधे हुए रखे थे। बोर्ड के मदरसों के लिए कुछ लकड़ी के सामान बनवाये गये थे। उसी के दाम थे। ठेकेदार वसूली के लिए बुलया गया था। आज ही सेक्रेटरी साहब ने चेक भेज कर खजाने से रूपये मँगवाये थे। मदारीलाल ने बरामदे में झाँक कर देखा, सुबोध का कहीं जाता नहीं। उनकी नीयत बदल गयी। दर्प्या में लोभ का सम्मिश्रण हो गया। काँपते हुए हाथों से पुलिंदे उठाये; पतलून की दोनों जेबों में भर कर तुरन्त कमरे से निकले और चपरासी को पुकार कर बोले-बाबू जी भीतर है? चपरासी आप ठेकेदार से कुछ वसूल करने की खुशी में फूला हुआ था। सामने वाले तमोली के दूकान से आकर बोला-जी नहीं, कचहरी में किसी से बातें कर रहे है। अभी-अभी तो गये हैं।

मदारीलाल ने दफ्तर में आकर एक क्लर्क से कहा-यह मिसिल ले जाकर सेक्रेटरी साहब को दिखाओ।

क्लर्क मिसिल लेकर चला गया। जरा देर में लौट कर बोला-सेक्रेटरी साहब कमरे में न थे। फाइल मेज पर रख आया हूँ।

मदारीलाल ने मुँह सिकोड़ कर कहा-कमरा छोड़ कर कहाँ चले जाएँ करते हैं? किसी दिन धोखा उठायेंगे।

क्लर्क ने कहा-उनके कमरे में दफ्तवालों के सिवा और जाता ही कौन है?

मदारीलाल ने तीव्र स्वर में कहा-तो क्या दफ्तरवाले सब के सब देवता हैं? कब किसकी नीयत बदल जाए, कोई नहीं कह सकता। मैंने छोटी-छोटी रकमों पर अच्छों-अच्छों की नीयतें बदलते देखी हैं। इस वक्त हम सभी साह हैं; लेकिन अवसर पाकर शायद ही कोई चूके। मनुष्य की यही प्रकृति है। आप जाकर उनके कमरे के दोनों दरवाजे बन्द कर दीजिए।

क्लर्क ने टाल कर कहा-चपरासी तो दरवाजे पर बैठा हुआ है।

मदारीलाल ने झुँझला कर कहा-आप से मैं जो कहता हूँ, वह कीजिए। कहने लगें, चपरासी बैठा हुआ है। चपरासी कोई ऋषि है, मुनि है? चपरसी ही कुछ उड़ा दे, तो आप उसका क्या कर लेंगे? जमानत भी है तो तीन सौ की। यहाँ एक-एक कागज लाखों का है।

यह कह कर मदारीलाल खुद उठे और दफ्तर के द्वार दोनों तरफ से बन्द कर दिये। जब चित् शांत हुआ तब नोटों के पुलिंदे जेब से निकाल कर एक आलमारी में कागजों के नीचे छिपा कर रख दियें फिर आकर अपने काम में व्यस्त हो गये।

सुबोधचन्द्र कोई घंटे-भर में लौटे। तब उनके कमरे का द्वार बन्द था। दफ्तर में आकर मुस्कराते हुए बोले-मेरा कमरा किसने बन्द कर दिया है, भाई क्या मेरी बेदखली हो गयी?

मदारीलाल ने खड़े होकर मृदु तिरस्कार दिखाते हुए कहा-साहब, गुस्ताखी माफ हो, आप जब कभी बाहर जाएँ, चाहे एक ही मिनट के लिए क्यों न हो, तब दरवाजा-बन्द कर दिया करें। आपकी मेज पर रूपये-पैसे और सरकारी कागज-पत्र बिखरे पड़े रहते हैं, न जाने किस वक्त किसकी नीयत बदल जाए। मैंने अभी सुना कि आप कहीं गये हैं, जब दरवाजे बन्द कर दिये।

सुबोधचन्द्र द्वार खोल कर कमरे में गये और सिगार पीने लगें मेज पर नोट रखे हुए है, इसके खबर ही न थी।

सहसा ठेकेदार ने आकर सलाम किया। सुबोध कुर्सी से उठ बैठे और बोले-तुमने बहुत देर कर दी, तुम्हारा ही इन्तजार कर रहा था। दस ही बजे रूपये मँगवा लिये थे। रसीद लिखवा लाये हो न?

ठेकेदार-हुजूर रसीद लिखवा लाया हूँ।

सुबोध-तो अपने रूपये ले जाओ। तुम्हारे काम से मैं बहुत खुश नहीं हूँ। लकड़ी तुमने अच्छी नहीं लगायी और काम में सफाई भी नहीं है। अगर ऐसा काम फिर करेंगे, तो ठेकेदारों के रजिस्टर से तुम्हारा नाम निकाल दिया जायगा।

यह कह कर सुबोध ने मेज पर निगाह डाली, तब नोटों के पुलिंदे न थे। सोचा, शायद किसी फाइल के नीचे दब गये हों। कुरसी के समीप के सब कागज उलट-पुलट डाले; मगर नोटों का कहीं पता नहीं। ऐं नोट कहाँ गये! अभी तो यही मेने रख दिये थे। जा कहाँ सकते हैं। फिर फाइलों को उलटने- पुलटने लगे। दिल में जरा-जरा धड़कन होने लगी। सारी मेज के कागज छान डाले, पुलिंदों का पता नहीं। तब वे कुरसी पर बैठकर इस आध घंटे में होने वाली घटनाओं की मन में आलोचना करने लगे-चपरासी ने नोटों के पुलिंदे लाकर मुझे दिये, खूब याद है। भला, यह भी भूलने की बात है और इतनी जल्द! मैंने नोटों को लेकर यहीं मेज पर रख दिया, गिना तक नहीं। फिर वकील साहब आ गये, पुराने



मुलाकाती हैं। उनसे बातें करता जरा उस पेड़ तक चला गया। उन्होंने पान मँगवाये, बस इतनी ही देर हुई। जब गया हूँ तब पुलिंदे रखे हुए थे। खूब अच्छी तरह याद है। तब ये नोट कहाँ गायब हो गये? मैंने किसी संदूक, दराज या आलमारी में नहीं रखे। फिर गये तो कहाँ? शायद दफ्तर में किसी ने सावधानी के लिए उठा कर रख दिये हों, यही बात है। मैं व्यर्थ ही इतना घबरा गया। छिः!

तुरन्त दफ्तर में आकर मदारीलाल से बोले-आपने मेरी मेज पर से नोट तो उठा कर नहीं रख दिये?

मदारीलाल ने भीँचक़े होकर कहा-क्या आपकी मेज पर नोट रखे हुए थे? मुझे तो खबर ही नहीं। अभी पंडित सोहनलाल एक फाइल लेकर गये थे, तब आपको कमरे में न देखा। जब मुझे मालूम हुआ कि आप किसी से बातें करने चले गये हैं, वब दरवाजे बन्द करा दिये। क्या कुछ नोट नहीं मिल रहे है?

सुबोध आँखें फैला कर बोले-अरे साहब, पूरे पाँच हजार के है। अभी-अभी चेक भुनाया है।

मदारीलाल ने सिर पीट कर कहा-पूरे पाँच हजार! हा भगवान! आपने मेज पर खूब देख लिया है?

‘अजी पंद्रह मिनट से तलाश कर रहा हूँ।’

‘चपरासी से पूछ लिया कि कौन-कौन आया था?’

‘आइए, जरा आप लोग भी तलाश कीजिए। मेरे तो होश उड़ें हुए है।’

सारा दफ्तर सेक्रेटरी साहब के कमरे की तलाशी लेने लगा। मेज, आलमारियाँ, संदूक सब देखे गये। रजिस्ट्रों के वर्क उलट-पुलट कर देंखे गये; मगर नोटों का कहीं पता नहीं। कोई उड़ा ले गया, अब इसमें कोई शबहा न था। सुबोध ने एक लम्बी साँस ली और कुर्सी पर बैठ गये। चेहरे का रंग फक हो गया। जर-सा मुँह निकल आया। इस समय कोई उन्हे देखत तो समझता कि महीनों से बीमार है।

मदारीलाल ने सहानुभूति दिखाते हुए कहा-गजब हो गया और क्या! आज तक कभी ऐसा अंधेर न हुआ था। मुझे यहाँ काम करते दस साल हो गये, कभी धेले की चीज भी गायब न हुई। मैं आपको पहले दिन सावधान कर देना चाहता था कि रूपये-पैसे के विषय में होशियार रहिएगा; मगर शुदनी थी, ख्याल न रहा। जरूर बाहर से कोई आदमी आया और नोट उड़ा कर गायब हो गया। चपरासी का यही अपराध है कि उसने किसी को कमरे में जोने ही क्यों दिया। वह लाख कसम खाये कि बाहर से कोई नहीं आया; लेकिन मैं इसे मान नहीं सकता। यहाँ से तो केवल पण्डित सोहनलाल एक फाइल लेकर गये थे; मगर दरवाजे ही से झाँक कर चले आये।

सोहनलाल ने सफाई दी-मैंने तो अन्दर कदम



ही नहीं रखा, साहब! अपने जवान बेटे की कसम खाता हूँ, जो अन्दर कदम रखा भी हो।

मदारीलाल ने माथा सिकोड़कर कहा-आप व्यर्थ में कसम क्यों खाते हैं। कोई आपसे कुछ कहता? (सुबोध के कान में) बैंक में कुछ रूपये हों तो निकाल कर ठेकेदार को दे लिये जाएँ, वरना बड़ी बदनामी होगी। नुकसान तो हो ही गया, अब उसके साथ अपमान क्यों हो।

सुबोध ने करुण-स्वर में कहा- बैंक में मुश्किल से दो-चार सौ रूपये होंगे, भाईजान! रूपये होते तो क्या चिन्ता थी। समझ लेता, जैसे पचीस हजार उड़ गये, वैसे ही तीस हजार भी उड़ गये। यहाँ तो कफन को भी कौड़ी नहीं।

उसी रात को सुबोधचन्द्र ने आत्महत्या कर ली। इतने रूपयों का प्रबन्ध करना उनके लिए कठिन था। मृत्यु के परदे के सिवा उन्हें अपनी वेदना, अपनी विवशता को छिपाने की और कोई आड़ न थी।

दूसरे दिन प्रातः चपरासी ने मदारीलाल के घर पहुँच कर आवाज दीं मदारी को रात-भर नींद न आयी थी। घबरा कर बाहर आय। चपरासी उन्हें देखते ही बोला-हुजूर! बड़ा गजब हो गया, सिकट्टरी साहब ने रात को गर्दन पर छुरी फेर ली।

मदारीलाल की आँखे ऊपर चढ़ गयीं, मुँह फैल गया और सारी देह सिहर उठी, मानों उनका हाथ बिजली के तार पर पड़ गया हो।

‘छुरी फेर ली?’

‘जी हाँ, आज सबेरे मालूम हुआ। पुलिसवाले जमा हैं। आपाके बुलाया है।’

‘लाश अभी पड़ी हुई हैं?’

‘जी हाँ, अभी डाक्टरी होने वाली हैं।’

‘बहुत से लोग जमा हैं?’

‘सब बड़े-बड़ अफसर जमा हैं। हुजूर, लहास की ओर ताकते नहीं बनता। कैसा भलामानुष हीरा आदमी था! सब लोग रो रहे हैं। छोड़े-छोटे दो बच्चे हैं, एक सायानी लड़की है ब्याहने लायक। बहू जी को लोग कितना रोक रहे हैं, पर बार-बार दौड़ कर लहास के पास आ जाती हैं। कोई ऐसा नहीं है, जो रूमाल से आँखें न पोछ रहा हो। अभी इतने ही दिन आये हुए, पर सबसे कितना मेल-जोल हो गया था। रूपये की तो कभी परवा ही नहीं थी। दिल दरियाब था!’

मदारीलाल के सिर में चक्कर आने लगा। द्वारा की चौखट पकड़ कर अपने को सँभाल न लेते, तो शायद गिर पड़ते। पूछा-बहू जी बहुत रो रही थीं?

‘कुछ न पूछिए, हुजूर। पेड़ की पत्तियाँ झड़ी जाती हैं। आँख फूल गर गूलर हो गयी है।’

‘कितने लड़के बतलाये तुमने?’

‘हुजूर, दो लड़के हैं और एक लड़की।’

‘नोटों के बारे में भी बातचीत हो रही होगी?’

‘जी हाँ, सब लोग यही कहते हैं कि दफ्तर के किसी आदमी का काम है। दारोगा जी तो सोहनलाल को गिरफ्तार करना चाहते थे; पर साइत आपसे सलाह लेकर करेंगे। सिकट्टरी साहब तो लिख गए हैं कि मेरा किसी पर शक नहीं है।’

‘क्या सेक्रेटरी साहब कोई खत लिख कर छोड़ गये है?’

‘हाँ, मालूम होता है, छुरी चलाते बखत याद आयी कि शुबहे में दफ्तर के सब लोग पकड़ लिए जाएँगे। बस, कलक्टर साहब के नाम चिट्ठी लिख दी।’

‘चिट्ठी में मेरे बारे में भी कुछ लिखा है? तुम्हें यक क्या मालूम होगा?’

‘हुजूर, अब मैं क्या जानूँ, मुदा इतना सब लोग कहते थे कि आपकी बड़ी तारीफ लिखी है।’

मदारीलाल की साँस और तेज हो गयी। आँखें से आँसू की दो बड़ी-बड़ी बूँदें गिर पड़ी। आँखें पोंछते हुए बोले-वे ओर मैं एक साथ के पढ़े थे, नन्दू! आठ-दस साल साथ रहा। साथ उठते-बैठते, साथ खाते, साथ खेलते। बस, इसी तरह रहते थे, जैसे दो सगे भाई रहते हों। खत में मेरी क्या तरीफ लिखी है? मगर तुम्हें क्या मालूम होगा?

‘आप तो चल ही रहे है, देख लीजिएगा।’

‘कफन का इन्ताजाम हो गया है?’

‘नही हुजूर, काह न कि अभी लहास की डाक्टरी होगी। मुदा अब जल्दी चलिए। ऐसा न हो, कोई दूसरा आदमी बुलाने आता हो।’

‘हमारे दफ्तर के सब लोग आ गये होंगे?’

‘जी हाँ; इस मुहल्लेवाले तो सभी थे।’

पृष्ठ ९ का शेष...ज्वालामुखी.....

‘मदारीलाल जब सुबोधचन्द्र के घर पहुँचे, तब उन्हें ऐसा मालूम हुआ कि सब लोग उनकी तरफ संदेह की आँखें से देख रहे हैं। पुलिस इंस्पेक्टर ने तुरन्त उन्हें बुला कर कहा–आप भी अपना बयान लिखा दें और सबके बयान तो लिख चुका हूँ।’

मदारीलाल ने ऐसी सावधानी से अपना बयान लिखाया कि पुलिस के अफसर भी दंग रह गये। उन्हें मदारीलाल पर शुबहा होता था, पर इस बयान ने उसका अंकुर भी निकाल डाला।

इसी वक्त सुबोध के दोनों बालक रोते हुए मदारीलाल के पास आये और कहा–चलिए, आपको अम्माँ बुलाती हैं। दोनों मदारीलाल से परिचित थे। मदारीलाल यहाँ तो रोज ही आते थे; पर घर में कभी नहीं गये थे। सुबोध की स्त्री उनसे पर्दा करती थी। यह बुलावा सुन कर उनका दिल धड़क उठा–कही इसका मुझ पर शुबहा न हो। कहीं सुबोध ने मेरे विषय में कोई संदेह न प्रकट किया हो। कुछ झिझकते और कुछ डरते हुए भीतर गए, तब विधवा का करुण–विलाप सुन कर कलेजा काँप उठा। इन्हें देखते ही उस अबला के आँसुओं का कोई दूसरा स्रोत खुल गया और लड़की तो दौड़ कर इनके पैरों से लिपट गई। दोनों लड़को ने भी घेर लिया। मदारीलाल को उन तीनों की आँखें में ऐसी अथाह वेदना, ऐसी विदारक याचना भरी हुई मालूम हुई कि वे उनकी ओर देख न सके। उनकी आत्मा अन्हें धिक्कारने लगी। जिन बेचारों को उन पर इतना विश्वास, इतना भरोसा, इतनी अत्मीयता, इतना स्नेह था, उन्हीं की गर्दन पर उन्होंने छुरी फेरी! उन्हीं के हाथों यह भरा–पूरा परिवार धूल में मिल गया! इन असाहायों का अब क्या हाल होगा? लड़की का विवाह करना है; कौन करेगा? बच्चों के लालन–पालन का भार कौन उठाएगा? मदारीलाल को इतनी आत्मगलानि हुई कि उनके मुँह से तसल्ली का एक शब्द भी न निकला। उन्हें ऐसा जान पड़ा कि मेरे मुख में कालिख पुती है, मेरा कद कुछ छोटा हो गया है। उन्होंने जिस वक्त नोट उड़ये थे, उन्हें गुमान भी न था कि उसका यह फल होगा। वे केवल सुबोध को जिच करना चाहते थें उनका सर्वनाश करने की इच्छा न थी।

शोकातुर विधवा ने सिसकते हुए कहा। भैया जी, हम लोगों को वे मझधार में छोड़ गए। अगर मुझे मालूम होता कि मन में यह बात ठान चुके हैं तो अपने पास जो कुछ था; वह सब उनके चरणों पर रख देती। मुझसे तो वे यही कहते रहे कि कोई न कोई उपाय हो जायगा। आप ही के मार्फत वे कोई महाजन ठीक करना चाहते थे। आपके ऊपर उन्हें कितना भरोसा था कि कह नहीं सकती।

मदारीलाल को ऐसा मालूम हुआ कि कोई उनके हृदय पर नशतर चला रहा है। उन्हें अपने कंठ में कोई चीज फँसी हुई जान पड़ती थी।

रामेश्वरी ने फिर कहा–रात सोये, तब खूब हँस रहे थे। रोज की तरह दूध पिया, बच्चो को प्यार किया, थोड़ीदेर हारमोनियम चाया और तब कुल्ला करके लेटे।

कोई ऐसी बात न थी जिससे लेशमात्र भी संदेह होता। मुझे चिन्तित देखकर बोले–तुम व्यर्थ घबराती हों बाबू मदारीलाल से मेरी पुरानी दोस्ती है। आखिर वह किस दिन काम आयेगी? मेरे साथ के खेले हुए हैं। इन नगर में उनका सबसे परिचय है। रूपयों का प्रबन्ध आसानी से हो जायगा। फिर न जाने कब मन में यह बात समायी। मैं नसीबों–जली ऐसी सोयी कि रात को मिनकी तक नहीं। क्या जानती थी कि वे अपनी जान पर खेले जाएंगे?

मदारीलाल को सारा विश्व आँखों में तैरता

हुआ मालूम हुआ। उन्होंने बहुत जब्त किया; मगर आँसुओं के प्रभाव को न रोक सके।

रामेश्वरी ने आँखें पोंछ कर फिर कहा–मैया जी, जो कुछ होना था, वह तो हो चुका; लेकिन आप उस दुष्ट का पता जरूर लगाइए, जिसने हमारा सर्वनाश कर लيدया है। यह दफ्तर ही के किसी आदमी का काम है। वे तो देवता थे। मुझसे यही कहते रहे कि मेरा किसी पर संदेह नहीं है, पर है यह किसी दफ्तरवाले का ही काम। आप से केवल इतनी विनती करती हूँ कि उस पापी को बच कर न जाने दीजिएगा। पुलिसताले शायद कुछ रिश्तत लेकर उसे छोड़ दें। आपको देख कर उनका यह हौसला न होगा। अब हमारे सिर पर आपके सिवा कौन है। किससे अपना दुन्छ कहे? लाश की यह दुर्गति होनी भी लिखी थी।

मदारीलाल के मन में एक बार ऐसा उबाल उठा कि सब कुछ खोल दें। साफ कह दें, मैं ही वह दुष्ट, वह अधम, वह पामर हूँ। विधवा के पेरों पर गिर पड़ें और कहेँ, वही छुरी इस हत्यारे की गर्दन पर फेर दो। पर जबान न खुली; इसी दशा में बैठे–बैटे उनके सिर में ऐसा चक्कर आया कि वे जमीन पर गिर पड़े।

तीसरे पहर लाश की परीक्षा समाप्त हुई। अर्थी जलाशय की ओर चली। सारा दफ्तर, सारे



हुक्काम और हजारों आदमी साथ थे। दाह–संस्कार लड़को को करना चाहिए था पर लड़के नाबालिग थे। इसलिए विधवा चलने को तैयार हो रही थी कि मदारीलाल ने जाकर कहा–बहू जी, यह संस्कार मुझे करने दो। तुम क्रिया पर बैठ जाओगी, तो बच्चों को कौन संभालेगा। सुबोध मेरे भाई थे। जिंदगी में उनके साथ कुछ सलूक न कर सका, अब जिंदगी के बाद मुझे दोस्ती का कुछ हक अदा कर लेने दो। आखिर मेरा भी तो उन पर कुछ हक था। रामेश्वरी ने रोकर कहा–आपको भगवान ने बड़ा उदार हृदय दिया है भैया जी, नहीं तो मरने पर कौन किसको पूछता है। दफ्तर के ओर लोग जो आधी–आधी रात तक हाथ बाँधे खड़े रहते थे झूठी बात पूछने न आये कि जरा ढाढ़स होता।

मदारीलाल ने दाह–संस्कार किया। तेरह दिन तक क्रिया पर बैठे रहे। तेरहवें दिन पिंडदान हुआ; ब्रहामणों ने भोजन किया, भिखरियों को अन्न–दान दिया गया, मित्रों की दावत हुई, और यह सब कुछ मदारीलाल ने अपने खर्च से किया। रामेश्वरी ने बहुत कहा कि आपने जितना किया उतना ही बहुत है। अब मैं आपको और जेरबार नहीं करना चाहती। दोस्ती का हक इससे ज्यादा और कोई क्या अदा करेगा, मगर मदारीलाल ने एक न सुनी। सारे शहर में उनके यश की धूम मच गयीं, मित्र हो तो ऐसा हो।

सोलहवें दिन विधवा ने मदारीलाल से कहा–भैया जी, आपने हमारे साथ जो उपकार और अनुग्रह किये हैं, उनसे हम मरते दम तक उन्मत्त नहीं हो सकते। आपने हमारी पीठ पर हाथ न रखा होता, तो न–जाने हमारी क्या गति होती। कहीं रूख की भी छाँह तो नहीं थी। अब हमें घर जाने दीजिए। वहाँ देहात में

खर्च भी कम होगा और कुछ खेती बारी का सिलसिला भी कर लूँगी। किसी न किसी तरह विपत्ति के दिन कट ही जाएँगे। इसी तरह हमारे ऊपर दया रखिएगा।

मदारीलाल ने पूछा–घर पर कितनी जायदाद है?

रामेश्वरी–जायदाद क्या है, एक कच्चा मकान है और दर–बारह बीघे की काश्तकारी है। पक्का मकान बनवाना शुरू किया था; मगर रूपये पूरे न पड़े। अभी अधूरा पड़ा हुआ है। दस–बारह हजार खर्च हो गये और अभी छत पड़ने की नौबत नहीं आयी।

मदारीलाल–कुछ रूपये बैंक में जमा हैं, या बस खेती ही का सहारा है?

विधवा–जमा तो एक पाई भी नहीं हैं, भैया जी! उनके हाथ में रूपये रहने ही नहीं पाते थे। बस, वही खेती का सहारा है।

मदारीलाल–तो उन खेतों में इतनी पैदावार हो जायगी कि लगान भी अदा हो जाए ओर तुम लोगो की गुजर–बसर भी हो?

रामेश्वरी–और कर ही क्या सकते हैं, भैया जी! किसी न किसी तरह जिंदगी तो काटश्नी ही है। बच्चे न होते तो मैं जहर खा लेती।

समाधि सुख और दुख के बाहर है

समय मन की उत्पत्ति है जब हम कहते हैं, तो बहुत कारणों से कहते हैं। पहला कारण तो यह है कि अगर आप सुख में हैं तो समय सिकुड़ जाता है। अगर आप दुख में हैं तो समय फैल जाता है। अगर आप किसी प्रियजन से मिल रहे हैं तो घड़ियां जल्दी भागती मालूम पड़ती हैं, और किसी शत्रु से मिलते हैं तो बड़ी मुश्किल से गुजरती मालूम पड़ती हैं। घड़ी अपने ढंग से कांटे घुमाए चली जाती है, लेकिन मन ! अगर रात घर में कोई मर रहा है, मरणशैया पर पड़ा है, तो रात कटती हुई मालूम नहीं होती। रात बहुत लंबी हो जाती है। ऐसा लगता है कि अब यह रात शुरू हुई तो समाप्त होगी कि नहीं होगी। घड़ी अपने ढंग से घूमती है। लेकिन ऐसा लगता है, आज घड़ी घूम रही है या नहीं घूम रही है? कांटे धीमे चल रहे हैं? लेकिन कोई प्रियजन आ गया है, रात ऐसे बीत जाती है जैसे क्षण में बीत गई। और डर लगता है कि अब बीती, अब बीती, जल्दी बीत रही है, घड़ी जल्दी क्यों चल रही है? घड़ी जल्दी नहीं चलती है, घड़ी अपने ढंग से चलती रहती है, लेकिन मन की स्थितियों पर समय का माप निर्भर करता है।

आइंस्टीन से लोग पूछा करते थे कि तुम्हारी यह ‘रिलेटिविटी’ की, तुम्हारी यह जो सापेक्षता की धारणा है, यह हमें समझाओ। तो आइंस्टीन कहता था, यह बड़ा कठिन है। और शायद जमीन पर दस–बारह आदमी हैं जिनसे मैं बात कर सकता हूँ इस संबंध में, सभी से बात नहीं कर सकता। लेकिन फिर भी तुम्हारे समझ में आ सके, ऐसा मैं तुम्हें उदाहरण देता हूँ...आइंस्टीन इसे समझाने को एक छोटा–सा उदाहरण दिया करता करता था। वह कहता था, अगर किसी आदमी को गर्म स्टोव के पास बिठा दिया जाए, तो समय और तरह से बीतता है। उसे अपनी प्रेयसी के पास बिठा दिया जाए तो समय और तरह से बीतता है। हमारा सुख, हमारा दुख हमारे समय की लंबाई को तय करता है।

समाधि सुख और दुख के बाहर है। समाधि आनंद की अवस्था है। वहां कोई लंबाई ही नहीं रह जाती। वहां समय बचता ही नहीं। समाधि के क्षण में तो कोई नहीं कह सकता है कि कृष्ण कब पैदा हुए, कब विदा हुए, समाधि के क्षण में तो कोई कहेगा कि कृष्ण हैं ही। उनका होना शाश्वत है। और कृष्ण का होना ही शाश्वत नहीं है, होना तो हमारा भी शाश्वत है। सब होना शाश्वत है।

रात आप स्वप्न देखते हैं, शायद कभी खयाल न किया हो कि स्वप्न में समय की स्थिति बिलकुल बदल जाती है जागने से। एक आदमी ने झपकी ली है क्षण–भर की और वह सपना देखता है इतना बड़ा जिसे देखने में वर्ष–भर लग जाए। वह देखता है उसका विवाह हो गया, उसके बच्चे हो गए, वह बच्चों की शादियां कर रहा है--वर्षों लग जाएं। क्षण–भर झपकी लगी है और आंख खुली है, वह हमें कहता है, इतना लंबा सपना देखा। हम उससे कहेंगे, पागल हो गए हो? इतना लंबा सपना क्षण–भर में कैसे देखोगे? अभी तो तुम जागते थे, अभी तुम जरा–सी झपकी लिए, आंख लगी ही थी और खुल गई, इस पलक झपने में तुम इतना लंबा सपना देख कैसे सकोगे? वह कहेगा, देख कैसे सकूंगा नहीं, मैंने देखा।

स्वप्न में मन बदल जाता है इसलिए समय की धारणा बदल जाती है। गहरी नींद में, सुषुप्ति में समय नहीं रह जाता। इसलिए आप जब बताते हैं कि रात बहुत गहरी नींद आई, तब भी आप जो समय का पता लगाते हैं वह समय का पता गहरी नींद से नहीं लगता, वह कब आप सोए, और कब आप जागे, इन दो छोरों के बीच में जो गुजर गया उसका हिसाब आप रख लेते हैं। लेकिन अगर आपसे कोई पूछे कि आपको बताया न जाए कि कब आप सोए कब आप जागे, तो आप कितनी देर सोए? आप बता न सकेंगे। मैं एक स्त्री को देखने गया, वह नौ महीनों से बेहोश है, और चिकित्सक कहते हैं वह तीन साल तक बेहोश रहेगी, और शायद बेहोशी में ही मरेगी। संभावना कम है कि उसका होश वापस आए। अगर तीन साल बाद वह स्त्री होश में आई, तो क्या बता सकेगी कि वह तीन साल तक बेहोश थी? इधर घड़ी हजारों बार घूम गई होगी, इधर कैलेंडर हजारों बार कट गया होगा, लेकिन वह स्त्री कुछ न बता सकेगी कि वह तीन साल बेहोश थी। सुषुप्ति में चित्त सो जाता है, इसलिए वहां भी समय का कोई बोध नहीं रह जाता। समाधि में चित्त खो जाता है, समाप्त हो जाता है, रहता ही नहीं। समाधि अ–चित्त, ‘नो माइंड’ की अवस्था है।

समाधि से कोई पता नहीं चलेगा कि कृष्ण कब हुए और कब नहीं हुए। एक झेन फकीर हुआ है, रिंझाई। उसने एक दिन सुबह अपने वक्तव्य में कहा कि पागलो, कौन कहता है कि बुद्ध हुए? तो उसके सुननेवालों ने कहा, आपका दिमाग तो ठीक है न? आप और कहते हैं, कौन कहता है बुद्ध हुए? बुद्ध के ही मंदिर में रहता है वह फकीर। बुद्ध की ही मूर्ति पर चढ़ाता है फूल! बुद्ध की मूर्ति के सामने नाच लेता है। बुद्ध का प्रेमी है। और एक दिन सुबह कहता है, कौन कहता है कि बुद्ध हुए? तो लोगों ने कहा, आप पागल तो नहीं हो गए? और उस रिंझाई ने कहा, पागल मैं था। क्योंकि हो तो वही सकता है जो एक दिन न भी हो जाए। लेकिन जो सदा है, उसके होने का क्या अर्थ! आज मैं तुमसे कहता हूँ, बुद्ध कभी नहीं हुए, ये सब झूठी कहानियां हैं। लोगों ने कहा, शास्त्र कहते हैं कि हुए, चले इस पृथ्वी पर, उठे–बैठे, बोले, गवाहियां हैं इस बात की, चश्मदीद गवाह हैं। और उस फकीर ने कहा, छाया चली होगी, छाया उठी होगी, छाया रही होगी। बुद्ध कभी उठते, कभी बैठते, कभी चलते! ‘दि शैडो’।

जो पैदा होता है, जो मरता है, वह हमारी छाया से ज्यादा नहीं है, वह हम नहीं हैं। इसलिए जानकर हिसाब नहीं रखा गया, सोचकर हिसाब नहीं रखा गया। धर्म इतिहास नहीं है। इतिहास होता है उसका जो आता है, जाता है--इति वृत्त--शुरू होता है, समाप्त होता है; आदि होता है, अंत होता है। धर्म इतिहास नहीं है। धर्म सनातन है। सनातन का अर्थ होता है, जो सदा है। उसमें कोई तिथियों का हिसाब नहीं रखा गया। इसलिए कोई समाधिस्थ व्यक्ति न कह सकेगा कब पैदा हुए, कब न हुए। कहने की कोई जरूरत भी नहीं है। कहने का कोई अर्थ भी नहीं है। कहना सिर्फ नासमझी से निकलता है। हम ही कब हुए हैं और कब नहीं हो जाएंगे! सदा से हैं, ‘इटर्निटी’, शाश्वतता है।

सिनेमा

लॉस एंजिल्स से भारत लौट रही हैं सनी लियोन!



कोरोना वायरस के बाद भारत में लॉकडाउन के दौरान बॉलीवुड एक्ट्रेस सनी लियोन अपने घर अमेरिका वापस लौट गयी थी। सनी लियोन बॉलीवुड में आने से पहले अमेरिका में ही रहती थी। सनी पॉर्न इंडस्ट्री के लिए काम अमेरिका से ही करती थी।

कोरोना वायरस के प्रकोप के बाद देश में लॉकडाउन के दौरान बॉलीवुड एक्ट्रेस सनी लियोन अपने घर अमेरिका वापस चली गयी थी।

सनी लियोन बॉलीवुड में आने से पहले अमेरिका में निवासरथ थी। सनी पॉर्न इंडस्ट्री के लिए फिल्म में काम अमेरिका से ही करती थी। लॉकडाउन होने के बाद वह अपने पति डेनियल वेबर और तीन बच्चों नूह, अशर और निशा के साथ अमेरिका चली गयी थी। अब जब भारत में लाकडाउन खुलने लगा है ऐसे में सनी लियोन ने भी भारत लौटने की तैयारी कर ली है। अब वह जल्दी ही भारत में लौटेंगी।

सनी लियोन ने कुछ दिन पूर्व सोशल मीडिया पर एक पोस्ट साझा की, जिसमें उसने लिखा है कि वह वापस मुंबई लौट रही है। अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर सनी ने गुलाब के पौधों के बीच खुद की एक खूबसूरत तस्वीर साझा की।

सफेद रंग की टॉप और बेज पैंट में वह हमेशा की तरह खूबसूरत लग रही थीं। सूरज की किरणें उनके सिर पर पड़ रही थी। इस खूबसूरत सी तस्वीर के साथ, सनी ने लिखा, घर आने का अब समय हो गया है। फ्लाइट लेने से पहले घर में परिवार के साथ बिताए पलों के कुछ क्षण। गुलाबों को सूंघने का सिर्फ एक आखिरी पड़ाव।

इससे पहले एक अखबार के साथ एक इंटरव्यू में सनी ने कहा था कि मैं अपने मुंबई के घर को बिल्कुल नहीं छोड़ना चाहती। भारत लौटने की योजना अंतरराष्ट्रीय उड़ानों के फिर से शुरू होने पर आधारित है। उन्होंने लिखा कि व्यक्तिगत रूप से, मुझे मुंबई छोड़ने का दुख था मैं मुंबई छोड़ना नहीं चाहती थी। यही वजह है कि हमें यहां आने का फैसला करने में इतना समय लगा।

हालांकि, हमारे लिए डैनियल की मां और उसके परिवार के आसपास रहना महत्वपूर्ण था। हर किसी की तरह, वे अपने प्रियजनों के साथ रहना चाहते थे।



कृति सेनन कर चुकीं है पैरानॉर्मल ऐक्टिविटीज को महसूस

फिल्म हॉलीवुड हो या बॉलीवुड, भूतिया फिल्में हर सिनेमा में बनती हैं क्योंकि लोग इसे देखना पसंद करते हैं। कुछ लोग मानते हैं कि भूत होते हैं और कुछ लोगों का मानना है कि भूत नाम की कोई चीज नहीं है।



फिल्म हॉलीवुड हो या बॉलीवुड, भूतिया फिल्में हर सिनेमा में बनती हैं क्योंकि हर व्यक्ति इसे पसंद करता है। कुछ लोगों का मानना है कि भूत होते हैं और कुछ लोगों इसको नहीं मानते हैं। बिना किसी अनुभव किए भूत का कॉन्सेप्ट कहा से आया। यह बहुत रहस्यमय है जिसका उत्तर अभी तक नहीं मिला है। भूतों के नाम पर अमेरिका जैसे देश में हैलोवीन डे भी बनाया जाता है। भूत या पैरानॉर्मल ऐक्टिविटी के बारे में बहुत से लोग स्टडी की हैं। पैरानॉर्मल ऐक्टिविटी जैसी घटना को हालिबुड एवं बॉलीवुड सितारों ने भी महसूस किया है जिसमें से एक भारतीय एक्ट्रेस कृति सेनन हैं। कृति ने इस बारे में खुद बताया है। एक साक्षात्कार

के दौरान कृति सेनन ने बताया कि जब दिलवाले की शूटिंग कर रहे थे तब उसके साथ कुछ ऐसा हुआ था जिसके बाद हम काफी डर गये थे। कृति ने बताया कि हम मेकअप आर्टिस्ट के साथ मेकअप रूम में थे। मेरी मेकअप आर्टिस्ट को पहले भी ऐसा लगा था कि उसके कमरे में कोई है लेकिन देखने पर कोई नहीं होता था लेकिन यह अहसास लगातार होता रहता था।

मेकअप रूम में भी अनेकों बार उसे ऐसा लगा कि कोई बार-बार पीछे की तरफ से चहलकदमी कर रहा है। एक बार तो वह काफी डर गयी क्योंकि उसे लगा कि किसी ने उन्हें पीछे की ओर खींचा हैं। उसने बताया कि रूम में ही थे अचानक से पानी की बोटल

जमीन पर गिर गयी। हमने उस बोटल को उठाया और फिर रखा तो वह बोटल फिर नीचे गिर गयी। ये घटना काफी भयभीत करने वाली थी। समझ नहीं आ रहा था कि आखिर क्या हो रहा हैं। सब हैरान थे। हमने टेबल चेक की तो वो टेबल हिलने वाली नहीं थी और न ही कही से कोई हवा आ रही थी कि बोटल गिर जाए। हमने वो शूट बहुत डर में पूरा किया था।

कृति की कहानी में क्या सच कोई भूत था या किसी टीम मेंबर्स की तरफ से डराने की शरारत की गयी थी ये तो उन्हीं को पता होता लेकिन बोतल कई बार इस लिए भी फिर जाती है अगर वह खाली हो और जहां वो रखी हो वहां का साइड ऊंचा-नीचा हो।

कु शोभा

स्वास्थ्य

दांतों की देखभाल करने के लिये घरेलू नुस्खे

बढ़ती उम्र या अधिक दवाइयों का सेवन भी दांतों के पीलेपन के कारण हो सकते हैं। हममें से अधिकतर लोग चेहरे की खूबसूरती पर बहुत ध्यान देते हैं, लेकिन समय रहते दांतों की खूबसूरती पर ध्यान नहीं देते। ऐसे में, जब दांत बहुत अधिक पीले या बदरंग हो जाते हैं तो ये अच्छा नहीं लगता।



तुलसी और नमक, इनका इस्तेमाल करने से पीले और गन्दे दिखने वाले दांत भी सफेद हो जाते हैं। लोग उन्मुक्त होकर हंसने डरते हैं जिन लोगों के दांत पीले होते हैं वे हंसने में संकोच करते हैं। इसका एकमात्र कारण है कि वे सही ढंग से दांतों की देखभाल नहीं करते हैं।

सही ढंग से दांतों की देखभाल नहीं करने के कारण उनके बीच प्लाक जम जाता है और इसी वजह से दांत पीले हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त खाने की कुछ चीजों के लगातार उपयोग, बढ़ती उम्र या अधिक दवाइयों का इस्तेमाल करने पर भी दांतों के पीलेपन आता

हैं। अधिकतर लोग चेहरे की खूबसूरती पर बहुत ध्यान तो देते हैं, लेकिन अपने दांतों की खूबसूरती पर ध्यान नहीं देते। ऐसे में, जब दांत बहुत अधिक पीले या बदरंग हो जाते हैं तो यह शरीर की सुन्दरता को भी व आपके व्यक्तित्व को भी नुकसान पहुँचाते हैं। यदि आपके साथ भी यह समस्या है तो दांतों को सफेद बनाने के लिए अपनाएं ये दस तरीके... **तुलसी** - तुलसी में दांतों का पीलापन दूर करने की अद्भुत क्षमता पाई जाती है। तुलसी मुंह और दांत के रोगों से भी बचाव करती है। तुलसी के पत्तों को धूप में सुखा कर इसके पाउडर को टूथपेस्ट में मिलाकर ब्रश करने

से दांत चमकने लगते हैं।

नमक - नमक दांतों को साफ करने का बेहतरीन पुराना नुस्खा है। नमक के साथ थोड़ा-सा चारकोल मिलाकर दांत साफ करने से पीलापन दूर हो जाता है और दांत चमकने लगते हैं। **संतरे के छिलके** - संतरे के छिलके और तुलसी के पत्तों को सुखाकर पाउडर बना कउ ब्रश करने के बाद इस पाउडर से दांतों पर धीरे-धीरे मसाज करें। संतरे में मौजूद विटामिन सी और कैल्शियम के कारण दांत मोटी जैसे चमकने लगते हैं।

गाजर - हररोज एक गाजर खाने से भी दांतों का पीलापन कम हो जाता है। इसके इस्तेमाल से भोजन करने के बाद गाजर खाने से इसमें मौजूद रेशे दांतों की अच्छे से सफाई कर देते हैं। **नीम** - नीम का प्रयोग प्राचीनकाल से ही दांत साफ करने के लिए किया जाता रहा है। नीम में दांतों को सफेद बनाने व बैक्टीरिया को नष्ट करने के गुण पाए जाते हैं। यह प्राकृतिक एंटीबैक्टीरियल और एंटीसेप्टिक है। हररोज नीम के दातून से मुंह धोने पर दांतों के रोग नहीं होते हैं।

बेकिंग सोडा - बेकिंग सोडा पीले दांतों को सफेद बनाने का सबसे अच्छा घरेलू तरीका है। ब्रश करने के बाद थोड़ा-सा बेकिंग सोडा लेकर दांतों को साफ करें। इससे दांतों पर

जमी पीली पर्त साफ हो जाती है। बेकिंग सोडा और थोड़ा नमक टूथपेस्ट में मिलाकर ब्रश करने से भी दांत साफ हो जाते हैं।

नींबू - नींबू एक ऐसा फल है जो मुंह में लार में वृद्धि करता है। इससे दांतों और मसूड़ों की सेहत अच्छी होती है। एक नींबू का रस निकालकर उसमें उतनी ही मात्रा में पानी मिला लें। खाने के बाद पानी से कुल्ला करें। इस नुस्खे को अपनाने से दांत सफेद हो जाते हैं और सांसों की दुर्गंध भी दूर हो जाती है।

स्ट्रॉबेरी - स्ट्रॉबेरी दांतों को चमकदार बनाने का सबसे उत्तम उपाय है। स्ट्रॉबेरी में पाया जाने वाला मैलिक एसिड दांतों को सफेद और मजबूत बनाता है। स्ट्रॉबेरी को पीसकर इसके पल्प में थोड़ा बेकिंग सोडा मिलाएं। ब्रश करने के बाद इस मिश्रण को उंगली से दांतों पर लगाएं, दांत चमकने लगेंगे।

केला - केला को अच्छी तरह पीस लें। इसके पेस्ट से दांतों को प्रतिदिन 3 मिनट तक मसाज करने के बाद दांतों को ब्रश करें। रोजाना ये उपाय करने से धीरे-धीरे दांतों का पीलापन खत्म हो जाएगा।

विनेगर - एक चम्मच जैतून के तेल में एप्पल विनेगर मिला लें। इस मिश्रण में अपना टूथब्रश डुबाएं और दांतों पर हल्के-हल्के चलाएं व थुक दें। ये प्रक्रिया तब तक दोहराएं, जब तक मिश्रण खत्म न हो जाए। इस नुस्खे को अपनाने से दांतों का पीलापन मिट जाता है। साथ ही, सांसों की दुर्गंध की समस्या भी नहीं रहती है।

टमाटर - टमाटर विटामिन सी से भरपूर होता है। टमाटर का रस दांतों के लिए बहुत अच्छा होता है। टमाटर के रस से दांतों पर मसाज करें। कुछ देर बाद ब्रश करें। दांत चमकने लगेंगे। टमाटर के इस्तेमाल से दांतों की मजबूती भी बढ़ती है।

पुलवामा पर पाक मंत्री की स्वीकारोक्ति के बाद राहुल माफी मांगें-नड्डा

बेगूसराय/सिवान-भाजपा अध्यक्ष जे पी नड्डा ने हाल ही में कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा कि पुलवामा आतंकी हमले में पाकिस्तान का हाथ होने की पड़ोसी देश के मंत्री की स्वीकारोक्ति के बाद कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी को देश से माफी मांगनी चाहिए।

बेगूसराय और सिवान में चुनावी रैलियों को संबोधित करते हुए नड्डा ने कहा कि पाकिस्तान की संसद में उसके एक मंत्री ने स्वीकार किया है कि पुलवामा हमले में पाकिस्तान का हाथ है। जबकि राहुल गांधी कहा करते थे कि इसमें पाकिस्तान का हाथ नहीं है और पाकिस्तान की बात सिर्फ बरगलाने के लिये है। कांग्रेस और राहुल गांधी पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा, उन्हें देश से माफी मांगनी चाहिए। भाजपा अध्यक्ष ने आरोप लगाया कि राहुल गांधी पाकिस्तान के वकील बने हुए हैं और पाकिस्तान की भाषा बोलते हैं। नड्डा ने आरोप लगाया कि अनुच्छेद 370 समाप्त करने को लेकर गांधी के बयान को पाकिस्तान के प्रधानमंत्री संयुक्त राष्ट्र में उद्धृत करते हैं। लालू प्रसाद के



नेतृत्व वाली राजद पर राज्य को पीछे ले जाने का आरोप लगाते हुए नड्डा ने कहा कि तेल पिलावन, डंडा भजावन लोगों ने पहले भी मौका मिलने पर कुछ नहीं किया और आगे भी कुछ नहीं करेंगे। महा गठबंधन पर निशाना साधते हुए उन्होंने आरोप लगाया, अराजक राजद, विध्वंसकारी भाकपा माले और कांग्रेस से विकास की अपेक्षा नहीं की जा सकती। सिवान

में रैली को संबोधित करते हुए नड्डा ने कहा कि बिहार में 15 साल पहले शाम के बाद बाजार में निकलने की हिम्मत नहीं होती थी। उन्होंने कहा कि शहाबुद्दीन यहां अराजकता फैलाता था और लालू के राज में खुलेआम घूमता था और नीतीश कुमार के आने के बाद शहाबुद्दीन को पहले यहां की जेल में और फिर तिहाड़ जेल में भेजा गया।

नड्डा ने कहा कि राम मंदिर के मामले में एक पक्ष के वकील कपिल सिब्बल ने उच्चतम न्यायालय में इस मामले को लटकाने का प्रयास किया। उन्होंने कहा, देश के सभी लोग चाहते थे कि अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य राम मंदिर बने। कांग्रेस ने इसे लटकाने, अटकाने और भटकाने का काम किया। उन्होंने कहा कि नरेंद्र मोदी जी दोबारा प्रधानमंत्री बने, तब इस मामले में प्रतिदिन सुनवाई हुई और रामजन्मभूमि के पक्ष में फैसला आया और अब वहां भव्य राममंदिर बन रहा है। नड्डा ने कहा कि पहले लोग नारे लगाते थे कि एक देश में दो विधान दो निशान नहीं चलेंगे, जब मोदी सरकार आई तब अनुच्छेद 370 को निरस्त किया गया। उन्होंने कहा कि आजकल महागठबंधन वाले लुभावने नारे लेकर आ रहे हैं कि वे नौकरी देंगे। लेकिन जनता के सामने प्रश्न है कि इन पर विश्वास किया जाए या नहीं? नड्डा ने कहा, मैं कहता हूं कि किसी के कहे पर विश्वास मत करो, उसने भूतकाल में क्या काम किया है उसके आधार पर वोट करना चाहिए।

नीतीश के शासन में बिहार में कोई काम नहीं हुआ-तेजस्वी

तेघड़ा/विभूतिपुर-राजद नेता तेजस्वी यादव ने नीतीश कुमार राजग सरकार पर बिहार को विशेष राज्य का दर्जा दिलाने में विफल रहने का आरोप लगाते हुए हाल ही में सवाल किया कि क्या यह दर्जा अमेरिकी राष्ट्रपति दिलाएंगे? तेजस्वी ने तेघड़ा और विभूतिपुर में चुनावी रैलियों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रदेश की राजग सरकार 15 वर्षों से है, डबल इंजन की सरकार है लेकिन बिहार को विशेष राज्य का दर्जा नहीं मिला। उन्होंने सवाल किया, क्या अमेरिकी राष्ट्रपति यहां आकर विशेष राज्य का दर्जा दिलायेंगे? या मोदी जी दिलायेंगे? उन्होंने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर हमला बोलते हुए कहा कि पिछले 15 साल के शासन में उन्होंने राज्य की शिक्षा, स्वास्थ्य और उद्योग की व्यवस्था को चौपट कर दिया है और यही वजह है कि वह बेरोजगारी, उद्योगों में नौकरी, निवेश और पलायन जैसे मुद्दों पर नहीं बोलते हैं। राजद नेता ने सवाल किया कि क्या उन्हें इन मुद्दों पर नहीं बोलना चाहिए? तेजस्वी ने रोजगार एवं विकास के चुनावी वादे को दोहराते हुए कहा कि उन्हें सरकार बनाने का मौका मिला तो कैबिनेट की पहली बैठक में 10 लाख लोगों को सरकारी नौकरी देने के फैसले को मंजूरी देंगे। उन्होंने कहा, हमारी सरकार आने पर बिहारवासियों को कमाई, पढ़ाई और दवाई के लिए बाहर नहीं जाना पड़ेगा। तेजस्वी ने कहा कि पंद्रह वर्ष के शासनकाल में नीतीश सरकार ने बिहार में कुछ नहीं किया और आज भी शिक्षा, इलाज और रोजी-रोटी के लिये लोगों का पलायन जारी है। राजद नेता ने कहा कि उनकी सरकार बन गई तो नियोजित शिक्षकों की समान काम के बदले समान वेतन, आंगनवाड़ी सेविका, टोला सेवक की मांग को पूरा किया जाएगा।



दिल्ली दंगों ने देश विभाजन की याद ताजा की-कोर्ट

नई दिल्ली-सीए और एनआरसी को लेकर फरवरी महीने में उत्तर-पूर्वी दिल्ली में भड़के साम्प्रदायिक दंगों के एक मामले पर सुनवाई करते हुए अदालत ने कहा कि इन दंगों ने देश के विभाजन के समय हुए नरसंहार की याद को ताजा कर दिया। अदालत ने इंटेलिजेंस ब्यूरो (आईबी) के अधिकारी अंकित शर्मा की हत्या से जुड़े मामले की सुनवाई करते हुए यह टिप्पणी की।

कड़कड़डूमा स्थित अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश विनोद यादव की अदालत ने एक आरोपी की अग्रिम जमानत याचिका को खारिज करते हुए कहा कि दंगे एक आग

की तरह होते हैं, जोकि अगर किसी जंगल में लग जाए तो वह तेजी से फैलती है। बेशक इस बार दिल्ली के एक हिस्से में यह दंगे हुए, लेकिन भारी जान-माल का नुकसान हुआ। अगर इस बार इन दंगों को गंभीरता से नहीं लिया गया तो निश्चित तौर पर दंगों की आग दूसरे क्षेत्रों को अपनी चपेट में लेगी और ना जाने और कितने बेकसूर इनकी चपेट में आएंगे। इस मामले में आरोपी ने अपनी पत्नी की बीमारी का हवाला देते हुए अग्रिम जमानत की मांग की थी, लेकिन अदालत ने कहा कि यह अपराध इतना भयावह है कि इसके सामने सभी दलीलें बौनी साबित होती हैं। जिस समय

दंगे फैलाए जा रहे थे तब लोगों को अपने परिवार या अन्य रिश्तों की परवाह क्यों नहीं थी। अब जब खुद पर कानूनी शिवंजा कसने की बारी आई तो परिवार, पत्नी और ना जाने किन-किन रिश्तों की याद आरोपियों का आ रही है।

अदालत ने यह भी कहा कि उन लोगों के दर्द को समझने का प्रयास भी करना चाहिए, जिन्होंने कोई कसूर ना होते हुए भी अपने परिवार के सदस्यों या फिर दुकान, मकान या लूट जैसी मार की है। यह पूरा घटना उस समय को याद दिलाता है जब देश का विभाजन हुआ था और दो समुदायों की तरफ से एक-दूसरे को भारी से भारी नुकसान पहुंचाने का जुनून था। अदालत ने कहा कि बेशक उस समय को प्रत्यक्ष देखने वाले लोग बहुत कम होंगे, लेकिन उस दर्द को अब तक महसूस किया जा सकता है।

दिल्ली दंगों में 53 लोगों की हुई थी मौत - गौरतलब है कि नागरिकता कानून के समर्थकों और विरोधियों के बीच संघर्ष के बाद 24 फरवरी को उत्तर-पूर्वी दिल्ली के जाफराबाद, मौजपुर, बाबरपुर, घोंडा, चांदबाग, शिव विहार, भजनपुरा, यमुना विहार इलाकों में साम्प्रदायिक दंगे भड़क गए थे। इस हिंसा में कम से कम 53 लोगों की मौत हो गई थी और 200 से अधिक लोग घायल हो गए थे। साथ ही सरकारी और निजी संपत्ति को भी काफी नुकसान पहुंचा था।

उग्र भीड़ ने मकानों, दुकानों, वाहनों, एक पेट्रोल पम्प को पूंक दिया था और स्थानीय लोगों तथा पुलिस कर्मियों पर पथराव किया। इस दौरान राजस्थान के सीकर के रहने वाले दिल्ली पुलिस के हेड कांस्टेबल रतन लाल की 24 फरवरी को गोकलपुरी में हुई हिंसा के दौरान गोली लगने से मौत हो गई थी और डीसीपी और एसीपी सहित कई पुलिसकमा गंभीर रूप से घायल गए थे।

दंगे एक आग की तरह होते हैं, जोकि अगर किसी जंगल में लग जाए तो वह तेजी से फैलती है, बेशक इस बार दिल्ली के एक हिस्से में यह दंगे हुए, लेकिन भारी जान-माल का नुकसान हुआ।

वकील ने सीबीआई के डीआईजी के खिलाफ अवमानना की कार्यवाही शुरू करने के लिए मांगी अनुमति

नई दिल्ली-वकील अमित साहनी ने दिल्ली सरकार के स्थायी वकील को अभिवेदन देकर सीबीआई के उप महानिरीक्षक (डीआईजी) राघवेंद्र वत्स के खिलाफ आपराधिक अवमानना कार्यवाही शुरू करने की अनुमति मांगी है। वत्स ने एक लोक अभियोजक के चेहरे पर कथित रूप से घूंसा मारा था।

साहनी ने दिल्ली सरकार के स्थायी वकील (आपराधिक) राहुल मेहरा को भेजे अभिवेदन में वत्स के खिलाफ आपराधिक अवमानना की कार्यवाही शुरू करने की अनुमति मांगी है। वत्स यहां सीबीआई मुख्यालय में तैनात आईपीएस अधिकारी हैं। साहनी ने न्याय प्रदान करने में कथित रूप से जानबूझ कर बाधा पैदा करने के लिए डीआईजी के खिलाफ कार्यवाही शुरू करने की अनुमति मांगी है। यह मामला उस समय सामने आया था, जब लोक अभियोजक सुनील कुमार वर्मा ने एक निचली अदालत में सुनवाई के दौरान बताया था कि उन्होंने उनके (वर्मा के) चेहरे पर घूंसा मारने को लेकर वत्स के खिलाफ पुलिस में एक शिकायत दर्ज कराई है।

डीआईजी ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के निजी सचिव राजेंद्र कुमार से संबंधित एक मामले में आरोप तय करने में देरी को लेकर वर्मा के चेहरे पर कथित रूप से घूंसा मारा था। सीबीआई ने अपने लोक अभियोजक के इस आरोप को लेकर एक तथ्यान्वेषी जांच शुरू की है और निचली

अदालत ने डीआईजी को तलब किया है। साहनी ने 28 अक्टूबर 2020 को दिए अभिवेदन में कहा, यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि राजनीतिक बाध्यताएं किसी सीबीआई अधिकारी को नई दिल्ली में सीबीआई की विशेष अदालत के सामने लंबित आरोपों को तय करने में तेजी लाने के लिए मुख्य एजेंसी के वकीलालोक अभियोजक को पीटने उसका गला दबाने की अनुमति नहीं देती हैं।

वकील ने कहा कि वह दिल्ली हाई कोर्ट बार एसोसिएशन और सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन का जिम्मेदार सदस्य होने के नाते आईपीएस अधिकारी के खिलाफ अपराधिक अवमानना की कार्यवाही शुरू करना चाहते हैं। साहनी ने बार काउंसिल ऑफ इंडिया (बीसीआई) को भी पत्र लिखकर अनुरोध किया है कि वह सीबीआई के लोक अभियोजक पर कथित शारीरिक हमले की दुर्भाग्यपूर्ण घटना के संबंध में उचित कार्यवाही करे। एजेंसी ने कुमार के खिलाफ करीब चार वर्ष पहले एक आरोप पत्र दाखिल किया था।

इससे पहले, सूत्रों ने बताया था कि डीआईजी वत्स ने आठ अक्टूबर को वर्मा के खिलाफ अपने वरिष्ठों को एक आधिकारिक शिकायत दी थी, जिसमें उन्होंने उन पर दुर्व्यवहार करने, कार्य के प्रति उदासीन रवैया अपनाने, कार्यालय से अनुपस्थिति आदि के आरोप लगाये थे।

विश्व में कोरोना संक्रमितों की संख्या 4.49 करोड़ के पार

विश्व में कोरोना वायरस (कोविड-19) महामारी से संक्रमितों की संख्या 4.49 करोड़ के पार हो गयी है और इस महामारी से अभी तक 11.80 लाख से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है तथा तीन करोड़ दो लाख से अधिक मरीज इससे निजात पा चुके हैं। अमेरिका की जॉन हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी के विज्ञान एवं इंजीनियरिंग केन्द्र (सीएसएसई) की ओर से जारी आंकड़ों के अनुसार विश्व में कोरोना वायरस से अब तक 4,49,42,003 लोग संक्रमित हुए हैं।

भविष्य में फैलने वाली महामारियां और भी खतरनाक होंगी

नई दिल्ली-लंबे समय से विश्व और भारत के लोग गंभीर कोरोना वायरस से जूझ रहे हैं। इस साल कोरोना महामारी के चलते पहले ही आई डेरों बुरी खबरों ने दुखी किया हुआ है कि इस बीच प्रमुख विशेषज्ञों की एक रिपोर्ट फिर से डरा रही है। ये रिपोर्ट कहती है कि दुनिया भविष्य में और अधिक बार महामारी का अनुभव कर सकती है, कि इनमें से कुछ कोरोना वायरस की तुलना में घातक होंगे, और नियंत्रित करने के लिए महंगे होंगे। जैव विविधता और महामारी पर ये वैश्विक रिपोर्ट दुनिया भर के 22 प्रमुख विशेषज्ञों द्वारा लिखी गई थी, और हाल ही में जारी की गई। यह जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं पर अंतरसरकारी विज्ञान-नीति प्लेटफॉर्म द्वारा बुलाई गई कार्यशाला का परिणाम है जो प्रकृति के क्षरण और बढ़ती महामारी के जोखिमों के बीच संबंधों पर

केंद्रित है। रिपोर्ट की चेतावनी के अनुसार जिन्हें लगता है कि कोरोना इकलौता ऐसा घातक वायरस है वे जान लें कि प्रकृति में 540,000 - 850,000 अज्ञात वायरस हैं जो लोगों को संक्रमित कर सकते हैं। दिलचस्प बात यह है कि यह रिपोर्ट विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) द्वारा फैच गुयाना में मायरो वायरस की बीमारी के फैलने के तीन दिन बाद आई है। डेंगू के समान लक्षणों के साथ, यह वायरस भी मच्छरों के माध्यम से फैलता है। इबोला, जिका, निपाह इन्सेपेलाइटिस, और इन्फ्लूएंजा, एचआईवी/एड्स, कोविड-19 जैसी लगभग सभी ज्ञात महामारियों में से अधिकांश पशु रोगों की उत्पत्ति के रोगाणु हैं। आईपीबीईएस रिपोर्ट में कहा गया है कि वन्यजीवों, पशुओं और लोगों के बीच संपर्क के कारण ये रोगाणु फैल जाते हैं।